Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-39 अंक-19
कल्पादि सम्वत् 1972949115

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 29 जुलाई से 04 अगस्त 2015 तक
द्वि.आषाढ़ शु० त्रयोदशी से श्रावण कृष्ण पंचमी सम्वत् 2072 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

खूनी घोटाला... पृष्ठ- 3

दिल की धड़कन... पृष्ठ- 4

अच्छे काम से होती.. पृष्ठ- 5

BACK TO VIOLENCE- पृष्ठ- 9

कब तक गाल... पृष्ठ- 12

- हकीकत से दूर है 'मेक इन इंडिया'
- अल्पसंख्यकों की विरोधाभाषी परिभाषा ने भारतीय राज्य व्यवस्था में घुन लगा दिए हैं!
- एकता-अखण्डता का तिरस्कार है जनमत संग्रह की मांग
- घटने की बजाय बढ़ रहा 'जातिवादी' जहर
- पाश्चात्य जीवन पद्धति के दुष्परिणाम

'भारत को अखण्ड हिन्दू राष्ट्र बनाना है'

हिन्दू महासभा द्वारा जीन्द में हिन्दू जागो अभियान की शुरुआत हुयी

● संवाददाता ●

हरियाणा के जीन्द से अखिल भारत हिन्दू महासभा, हरियाणा प्रदेश द्वारा हिन्दू जागो अभियान की शुरुआत की गई। जीन्द के जाट धर्मशाला में आयोजित सम्मेलन में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने हिन्दू जागो अभियान का शुभारम्भ किया। यह अभियान पूरे हरियाणा प्रदेश में चलेगा। इस अभियान के माध्यम से हरियाणा के सभी जिलों, शहरों एवं ब्लाकों में हिन्दू जागो सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। साथ–साथ हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ता गांव–गांव एवं कस्बों–शहरों में धूम–घूमकर हिन्दुओं में जनजागृति पैदा करेंगे। जात–पात ,

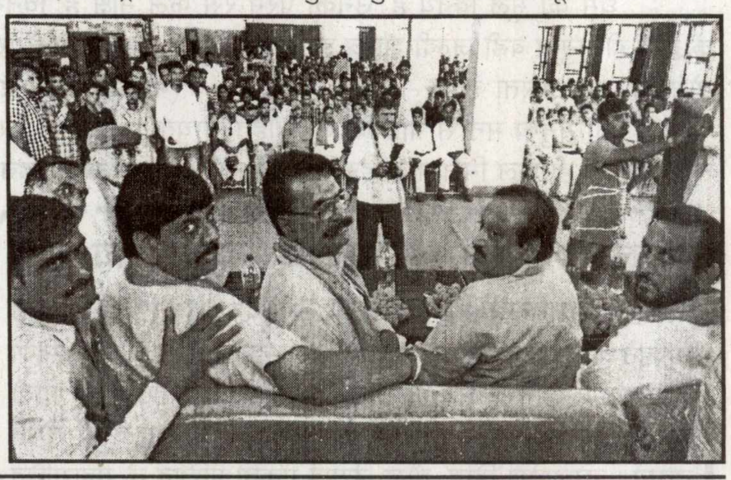

शेष पृष्ठ 11 पर

नासिक में सिंहस्थ कुंभ मेला शुरू, हिन्दू महासभा ने चाक-चौबन्द सुरक्षा की मांग की

● संवाददाता ●

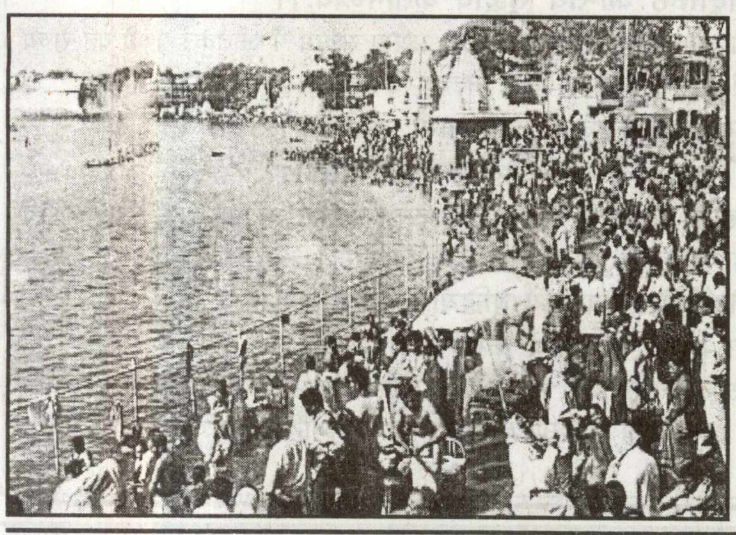

धरती पर होने वाले सबसे बड़े धार्मिक समागमों में से एक सिंहस्थ कुंभ मेला शुरू हो गया है। जिसके लिए बड़ी संख्या में साधु और श्रद्धालु शहर पहुंच रहे हैं। कुंभ के दौरान श्रद्धालु गोदावरी नदी में पवित्र स्नान करते हैं। समारोह का आयोजन नासिक गंगा गोदावरी पंचकोटी पुरोहित संघ और त्र्यम्बकेश्वर पुरोहित संघ कर रहे हैं। नासिक एवं त्र्यम्बकेश्वर पुरोहित संघ के अध्यक्ष सतीश शुक्ला और त्र्यम्बकेश्वर पुरोहित संघ के अध्यक्ष जयंत शिखर ने बताया कि हर १२ वर्ष के अंतराल पर हिंदू कैलेन्डर के अनुसार माघ माह में जब सूर्य और बृहस्पति एक साथ सिंह राशि में प्रवेश करते हैं तब नासिक–त्र्यम्बकेश्वर मे कुंभ मेला आयोजित किया जाता है। नासिक में स्थानीय निकाय ने ३१५ एकड़ से अधिक बड़े स्थान पर साधुओं के रहने के लिए साधू ग्राम तैयार किया है। शाही स्नान नासिक में २६ अगस्त, १३ सितंबर और १८ सितंबर को होगा। जबकि त्र्यम्बकेश्वर में २६ अगस्त, १३ सितंबर और २५ सितंबर को होगा। नासिक साधू ग्राम मे वैष्णव संप्रदायए निर्मोही, निर्वाणी और दिगम्बर अखाड़ों के साधू रूकेंगे। त्र्यम्बकेश्वर साधू ग्राम में नागा साधुओं सहित शैव संप्रदाय के साधू ठहरेंगे। समझा जाता है कि १८वीं सदी के आखिर में कुंभ मेला के दौरान दोनों संप्रदायों के साधुओं के बीच टकराव में हजारों साधुओं की जान चली गई थी जिसके बाद पेशवा शासकों ने दोनों संप्रदायों के अनुयाइयों की अलग अलग व्यवस्था करने का आदेश दिया था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के

शेष पृष्ठ 11 पर

संत वाणी

जब से जिसके हृदय में मंगलधाम श्री हरि बसने लगते हैं, तभी से उनके लिये नित्य उत्सव है, नित्य लक्ष्मी और नित्य मंगल है।

(महर्षि जमदग्नि)

अकीर्ति के समान कोई मृत्यु नहीं है। क्रोध के समान कोई शत्रु नहीं है। निन्दा के समान कोई पाप नहीं है और मोह के समान कोई मादक पदार्थ नहीं है। काम के समान कोई आग नहीं है, राग के समान कोई बन्धन नहीं है और आसक्ति के समान कोई विष नहीं है।

(देवर्षि नारद)

हे राम! जो तुम्हीं में अपने मन और बुद्धि को लगाकर सदा संतुष्ट रहता है और अपने समस्त कर्मों को तुम्हें ही अर्पण कर देता है, उसका मन ही आपका शुभ गृह है। **(महर्षि बाल्मीकि)**

जो मनुष्य सत्य, तपस्या, ज्ञान, ध्यान तथा स्वाध्याय के द्वारा धर्म का अनुसरण करते हैं, वे महात्मा स्वर्गगामी होते हैं।

(महर्षि जैमिनि)

यह तरुण अवस्था, यह रूप, यह जीवन, रत्नराशि का यह संग्रह ऐश्वर्य तथा प्रियजनों का सहवास–सब कुछ अनित्य है, अतः विवेकी पुरुष को इनमें आसक्त नहीं होना चाहिये। **(महर्षि वैशम्पायन)**

अन्न देने वाले को प्राणदाता कहा जाता है और जो प्राणदाता है, वही सब कुछ देने वाला है। अतः अन्नदान करने से सब दानों का फल मिल जाता है। अन्न से पुष्ट होकर ही मनुष्य पुण्य का संचय करता है, अतः पुण्य का आधा अंश अन्नदाता को और आधा भाग पुण्यकर्ता को प्राप्त होता है। अन्न दान के समान कोई दान नहीं है।

(मातलि)

योगीजन शिव को आत्मा में देखते हैं, मूर्ति में नहीं। जो आत्मा में रहने वाले शिव को छोड़कर बाहर के शिव को पूजते हैं वे हाथ में रखे हुए लड्डू को छोड़कर कोहनी को चाटते हैं। **(भगवान शंकराचार्य)**

धर्म का मूल विनय है, उनका परम रस फल मोक्ष है, विनय के द्वारा ही मनुष्य बड़ी जल्दी शास्त्र ज्ञान, कीर्ति और अन्त में निःश्रेयस मोक्ष भी प्राप्त करता है। **(भगवान महावीर)**

जो मनुष्य मन से प्राणियों का अहित सोचता है, उसको इस लोक में वैसा ही फल मिलता है, इसमें संशय नहीं। **(नारायण पण्डित)**

बांग्लादेश से मोदी उठायें हिंदुओं का मुद्दा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बांग्लादेश पहुँचने पर बांग्लादेश में रहने वाले हिन्दू समुदाय ने कहा कि वे हमेशा धार्मिक रूढिवादियों द्वारा सताए जाने के भय के साथ जी रहे हैं। वे चाहते हैं कि मोदी इसका संज्ञान लें और इस मुद्दे को बांग्लादेश के नेतृत्व के समक्ष उठायें। बांग्लादेश हिन्दू, बौद्ध, ईसाई एकता परिषद के महासचिव राणा दासगुप्ता ने कहा, धार्मिक बहुसंख्यक और रूढ़िवादी गुट चाहते हैं कि हम हिन्दू जो यहीं पैदा हुए और बड़े हुए इस पर देश को छोड़कर चले जायें।

प्रतिक्रिया

१. गुप्ता जी, १९०६ में बांग्लादेश की राजधानी ढ़ाका में मुस्लिम लीग बनी।

२. ४१ वर्षों में ६३ प्रतिशत मुस्लिमों ने इसे अपना लिया और देश को बांटने में सफल हो गये।

३. आपको तो १९४७ में ही बांग्लादेश छोड़कर आ जाना चाहिए था और यहाँ के मुस्लिमों को जाने के लिए बाध्य करना चाहिएथा।

४. वहाँ अल्पसंख्यक ३० प्रतिशत से घटकर ८ प्रतिशत रह गये हैं। जबकि यहाँ १२ से बढ़कर १६ प्रतिशत हो गये हैं।

५. पश्चिम बंगाल में २७ प्रतिशत मुस्लिम हैं और असम में ३१ प्रतिशत हैं। घुसपैठियों की संख्या अलग है।

६. मोदी एक साल में नेहरूवादी हो गये हैं। अतः उनसे कोई आशा नहीं रखें। उनसे कहना बेकार है।

७. आप आतंकवादियों से वार्ता करें कि वे ऐसा वातावरण बनावें कि पश्चिम बंगाल और असम के मुस्लिम भारत छोड़कर बांग्ला देश आ जायें और आप बांग्लादेश छोड़कर भारत आ जायें। यह अदला बदली गैर सरकारी स्तर पर कर ली जाये जो कि आवश्यक है।

राजेश गोयल

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह आपके व्यक्तित्व के लोग कायल रहेंगे क्योंकि आप में जो बात है,वह हर किसी में नहीं होती है। इसलिए अपनी उपयोगिता बनायें रखें इसी में आप का हित होगा। आर्थिक स्थितियों में पहले की अपेक्षा मजबूती आयेगी। छात्रों को अपनी बिगड़ी हुयी दिनचर्या को सुधारना होगा। परिवार में किसी बुजुर्ग को शारीरिक कष्ट हो सकता है।

वृष - इस सप्ताह आप लोगों की सहायता करते–करते अपने–आपको शारीरिक रूप से थका हुआ महसूस करेंगे। आये हुये धन का आगे बढ़कर सत्कार करें अन्यथा अवसरों का इन्तजार ही करना पड़ेगा। सिंह का गुरू कुछ लोगों का स्थान परिवर्तन करा सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें। त्रुटि करना कोई गुनाह नहीं है।

मिथुन - इस सप्ताह कुछ लोगों को अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिए आर्थिक व मानसिक रूप से तैयार रहना होगा। अपने कार्यों की प्रशंसा स्वयं न करें तो हितकर रहेगा। बिगड़ी हुयी परिस्थितियां कुछ समय पश्चात अनुकूल हो जायेगी। साझेदारी वाले कार्यों से दूर ही रहें।

कर्क - इस सप्ताह आपको किसी नजदीकी व्यक्ति से पीड़ा मिल सकती है। सिंह का गुरू आपके दूसरे भाव मे गोचर करेगा। धन की स्थिति बेहतर होगी। कुछ लोगों के ससुराल से रिश्ते मधुर होंगे। जरूरी कर्य स्वयं करें न कि दूसरों के सहारे रहें।

सिंह - इस सप्ताह आपके रूके हुये कार्यों में प्रगति होगी जिससे मन कुछ हल्का होगा और आशावादी विचार उत्पन्न होंगे। लग्न का बृहस्पति आपके व्यक्तित्व में चार–चांद लगा देगा। कुछ लोग धार्मिक क्रिया–कलापों में अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। नयें सम्बन्धों में जल्दबाजी न करें।

कन्या - इस सप्ताह आप किसी के लालच में आ सकते हैं और वह आपका गलत तरीके से इस्तेमाल कर सकता है, अतः सावधानी अपेक्षित है। अपनी योजनाओं के प्रति सतर्क व सचेत रहने की आवश्यकता है।

तुला - इस सप्ताह कुछ लोग अपने पद, प्रतिष्ठा, सम्मपत्ति आदि विषयों के प्रति चिन्तित रह सकते हैं। निर्णय लेने की देरी के चक्कर में कोई अच्छा अवसर आप खो सकते हैं। अपनी आवश्यकताओं पर लगाम लगायें तभी जीवन की गाड़ी चल पायेगी।

वृश्चिक - आप–अपने निकटतम प्रतिद्वन्दियों से सावधनी बनायें रखें वरना वे आपकी छवि धूमिल करने का पूरा प्रयास करेंगे। काम के प्रति ईमानदारी बनायें रखने से आपकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। दूर की यात्रा में व्यवधान आने से मन खिन्न हो सकता है।

धनु - इस सप्ताह आप कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपके परिवार की प्रतिष्ठा खतरे में पड़ जायें। कदम फूॅक–फूॅक कर रखने की आवश्यकता है क्योंकि हर कदम पर विरोधी आपका विरोध करने के लिए तैयार बैठे हैं।

मकर - इस सप्ताह आप जो भी कार्य करेंगे उसके दूरगामी परिणाम लाभकारी प्रतीत हो सकते हैं। परिवार में राय–मशविरा लेकर ही कार्य करें। आध्यात्मिक कार्यो की ओर मन अग्रसर होगा। कलात्मक कार्यो के प्रति विशेष रूचि बनी रहेगी। पारिवारिक रिश्तों में नजदीकियां बढ़ने से मन आशावादी विचार आयेंगे।

कुम्भ - इस सप्ताह कुछ लोग पुरानी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करेंगे, परन्तु नजदीकी लोग ही टांग अड़ायेंगे। अनावश्यक वस्तुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित न करें। नवयुवक वाणी प्रयोग में सावधानी बरतें अन्यथा विवाद में पड़ सकते हैं।

मीन - इस सप्ताह लम्बे समय से प्रतीक्षारत कार्यों में प्रगति होगी जिससे मानसिक शान्ति मिलेगी। परिवार के कुछ सदस्यों के प्रति मन में उदासीनता बनी रहेगी। जल्दबाजी में किया गया कोई भी कार्य ठीक नहीं होता है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय सुद्धाय कृतनिच्श्रयः।।

या तो तू युद्ध में मारा जाकर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा संग्राम में जीतकर पृथ्वी का राज्य भोगेगा। इस कारण हे अर्जुन! तू इस युद्ध के लिये निश्चय करकर खड़ा हो जा।।३७।।

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

जय पराजय, लाभ–हानि और सुख–दुःख को समान समझकर, उसके बाद युद्ध के लिये तैयार हो जा, इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को नहीं प्राप्त होगा।।३८।।

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रृणु।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।।

हे पार्थ! यह बुद्धि तेरे लिये ज्ञान योग के विषय में कही गयी और अब तू इसको कर्म योग के विषय में सुन जिस बुद्धि से युक्त हुआ तू कर्मो के बन्धन को भली भाँति त्याग देगा अर्थात् सर्वथा नष्ट कर डालेगा।।३९।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 29 जुलाई से 04 अगस्त 2015 तक

अध्यक्षीय

खूनी घोटाला

भारत के पिछले ७ दशकों के इतिहास में बहुतेरे घोटाले हुए। कई बार केंद्र और राज्य सरकारों को, सत्तारूढ़ दलों, राजनीति के बड़े खिलाडियों को घोटालों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लिप्त रहने पर सत्ताच्युत, पदच्युत होना पड़ा या राजनीतिक संन्यास पर जाना पड़ा। जनता ने चुनावों के वक्त घोटालों का हिसाब अपने मतदान से कर लिया। घोटाले पदलेवा, नामलेवा तो साबित हुए, लेकिन जानलेवा नहीं। यह संभवतः पहली बार है जब कोई घोटाला इतना बड़ा और खतरनाक हो गया है कि वह एक–दो नहीं दसियों जान ले रहा है। मध्यप्रदेश के व्यावयासिक परीक्षा मंडल यानी व्यापमं घोटाले की तुलना सुरसा के मुंह से की जा सकती है, जिसमें किसी न किसी तरह से आरोप या जांच में संलग्न लोग समाते जा रहे हैं। या उस राक्षस से जिसकी क्षुधा शांत करने के लिए रोज एक शिकार उसके सामने परोसा जाता था। व्यापमं में धांधली तो बहुत पहले से चल रही है, लेकिन आज से ठीक २ साल पहले इसकी व्यापकता का खुलासा हुआ। जब ७ जुलाई, २०१३ को मध्य प्रदेश के इंदौर में पीएमटी की प्रवेश परीक्षा में कुछ छात्र फर्जी नाम पर परीक्षा देते पकड़े गए। तब पुलिस ने इसके मास्टर माइंड डॉक्टर जगदीश सागर को गिरफ्तार किया। डॉक्टर जगदीश सागर की गिरफ्तारी के बाद पता चला कि मध्य प्रदेश का व्यावसायिक परीक्षा मंडल यानी व्यापमं का दफ्तर इस धंधे का अहम अड्डा है। उच्च शिक्षा मंत्री के तहत काम करने वाला व्यावसायिक परीक्षा मंडल मेडिकल, इंजीनियरिंग और दूसरी व्यावसायिक पढ़ाई के साथ सरकारी नौकरियों के लिए प्रवेश परीक्षाएं करवाने और छात्रें के चयन का काम करता है। व्यापमं घोटाला दो हिस्सों में बंटा हुआ है। पहला तो ये कि मेडिकल और इंजीनियरिंग जैसी प्रवेश परीक्षाओं में धांधली हुई। वहीं दूसरा सरकारी नौकरियों के लिए हुई परीक्षाओं में भी गड़बड़ी करके नाकाबिल लोगों को नौकरी दी गई। ५५ केस, २५३० आरोपियों और १६८० गिरफ्तारियों के साथ यह घोटाला अब खूनी घोटाला कहा जाने लगा है। क्योंकि इसमें अब तक ४० से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। विगत तीन दिनों में ही तीन संदिग्ध मौतें भी इससे जोड़ी जा रही हैं। आज तक के पत्रकार अक्षय सिंह, जो इस मामले पर खबर जुटाने के लिए झाबुआ गए थे और वहां अचानक उनकी मौत हुई। फिर जबलपुर मेडिकल कॉलेज के डीन दिल्ली के एक होटल में मृत पाए गए और सागर में एक ट्रेनी महिला सब इंस्पेक्टर ने तालाब में कूद कर आत्महत्या कर ली। अनामिका नामक इस महिला की नियुक्ति पिछले साल व्यापमं से ही हुई थी। हालांकि सरकार इस आत्महत्या को पारिवारिक कलह से जोड़ रही है, किंतु अनामिका की मौत पर संदेह के बादल छाए हुए हैं। व्यापमं से ७६ लाख छात्रों का भविष्य जुड़ा है। लेकिन यह साफ नजर आ रहा है कि मध्यप्रदेश की शिवराज सिंह चौहान सरकार और केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार को केवल अपने भविष्य की चिंता है। नरेन्द्र मोदी ने गुजरात दंगों के वक्त भी मौन धारण किया था, वे अब भी मौन व्रत का पालन कर रहे हैं। मन की बात में या शिक्षक दिवस पर छात्रों से मीठी बातें कर वे स्वयं को लोकप्रिय प्रधानमंत्री दिखलाना चाहते हैं, लेकिन छात्रों के भविष्य के साथ, रोजगार के साथ खतरनाक खिलवाड़ हो रहा है। तो उनके पास प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए शब्दों का अकाल पड़ गया है। उधर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भी नरेन्द्र मोदी की तरह का ही बर्ताव कर रहे हैं। उन्हें मृतकों को श्रद्धांजलि देना आता है। यह कहना आता है कि हर मौत को व्यापमं से जोड़कर देखना ठीक नहींहै। मामले की निष्पक्ष जांच हो रही है, यह दावा ठोंकना भी आता है। लेकिन जिस घोटाले में आपकी सरकार के मंत्रियों, अधिकारियों का नाम शामिल है। विपक्षी दल आपके परिवार का नाम इसमें जोड़ रहा है। तब यह कहना नहींआता कि मैं मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देता हूं, ताकि सचमुच घोटाले की जांच पूरी निष्पक्षताए पारदर्शिता से हो सके। कांग्रेस इस मामले पर भाजपा को घेरने का कोई मौका नहींछोड़ रही और अब आम आदमी पांर्टी भी इसमें जुड़ गई है। कांग्रेस ने मुख्यमंत्री चौहान से कुछ जरूरी सवाल किए हैं जिनके जवाब उन्हें देने चाहिए। यहां सवाल विपक्ष को जवाब देने का नहींहै, जनता के प्रति जवाबदेही निभाने का है। यह भरोसा दिलाने का है कि अब इसके बाद व्यापमं से जुड़े किसी भी व्यक्ति की संदिग्ध मौत नहींहोगी। वर्ना यह संशय बना हुआ है कि अब व्यापमं का अगला निवाला कौन बनेगा।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

हकीकत से दूर है मेक इन इंडिया

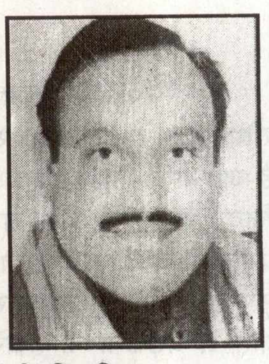

यह सभी जानते हैं कि असली भारत गांवों में बसता है। गांवों की स्थिति सुधारने के बजाए हमारे प्रधानमंत्री यात्रा करके विदेशों में बसे भारतीयों को यह समझाने की कोशिश की कि जिस भारत पर आपको शर्मिंदगी महसूस होती थी, वह अब बदल गया है। ऐसे लुभावने संबोधनों में मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी घोषणाएं और जुड़ गई हैं। जिनसे भारत की रंगत और निखरी–निखरी महसूस कराई जा सकती है, बिल्कुल फेयरनेस क्रीम के विज्ञापनों की तरह, जिनमें गुण–दोष सब दब जाते हैं। गोरेपन का महत्व ही रह जाता है। भारत की तस्वीर डिजिटल दुनिया में मनचाहे रूप–रंग की बनाई जा सकती है, लेकिन उसकी हकीकत परदे के पीछे क्या है। यह विगत सप्ताह जारी हुई सामाजिक–आर्थिक एवं जातीय जनगणना से समझी जा सकती है। देश के सभी ६४० जिलों में यह जनगणना हुई और इसमें ग्रामीण भारत से संबंधित जो आंकड़े निकले हैं, वे चौंकाते हैं कि भारत की तथाकथित तरक्की का सच क्या है। देश चलाने वालों को अंतिम कतार नजर ही नहींआ रही है, वहां तक पहुंचना और आखिरी व्यक्ति तक सहायता का हाथ देना तो दूर की बात है। जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले १७.६ करोड़ परिवारों में से ७५ प्रतिशत परिवारों में अधिकतर का अधिकतम वेतन महज ५००० रुपए यानी ८३ डॉलर से कम है। ४० प्रतिशत परिवार भूमिहीन हैं और मजदूरी करते हैं। जिन परिवारों के पास खेत है, उनमें से भी अधिकतर सिंचाई के लिए बारिश पर निर्भर हैं। २५ प्रतिशत के पास सिंचाई सुविधा नहीं है। सवा तेरह प्रतिशत परिवार एक कमरे के कच्चे मकान में रहते हैं। २५ प्रतिशत ग्रामीण परिवारों के पास फोन की सुविधा नहीं है। सिर्फ ८.२६ प्रतिशत परिवारों में ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका वेतन १० हजार रुपए प्रतिमाह से अधिक है। शेष १७.१८ प्रतिशत परिवार ऐसे हैं, जिनमें किसी व्यक्ति का वेतन ५००० रुपए से १०००० रुपए के बीच है। स्वच्छ भारत अभियान चलाने वाले देश की एक कड़वी हकीकत यह भी है कि १,८०,६५७ लोग अब भी सिर पर मैला ढोने का काम करते हैं। जबकि यह कानूनन जुर्म है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली देश की एक–तिहाई आबादी आजादी के ६८ साल बाद भी साक्षर नहीं हो पाई है। गौरतलब है कि ये आंकड़े केवल ग्रामीण भारत के हैं, शहरी आंकड़े अभी सामने नहींआए हैं। और जब शहरों की आर्थिक, सामाजिक दशा का ब्यौरा प्रस्तुत होगा तो तस्वीर का कालापन बढ़ेगा ही। शहरों में झुग्गी–झोपड़ी वाले इलाकों का निरंतर विस्तार और उसी अनुपात में शानदार रिहायशी इलाकों का निर्माण सामाजिक–आर्थिक विभेद की कहानी स्वयं कहता है। इस जनगणना में जातिगत आंकड़े जारी नहींकिए गए हैं, जबकि यूपीए सरकार के कार्यकाल में इसकी व्यवस्था की गई थी। लालू प्रसाद व जीतन राम मांझी जैसे नेताओं ने इस पर भाजपा से सवाल भी किए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बिहार में होने वाले चुनावों के मद्देनजर भाजपा जातिगत आंकड़े पेश करने से बचना चाहती है, इससे गरीबी का सामाजिक सच उद्‌घाटित हो सकता है। भारतीय राजनीति में गरीबी हमेशा ज्वलंत मुद्दा रहा है, लेकिन तभी तक जब तक गरीबों के नाम पर सत्ता पर काबिज हुआ जा सके। राजनेताओं द्वारा स्वयं को गरीब बताकर महिमामंडित करना और दूसरे को अमीर बताकर उसे जमीनी हकीकत से दूर दिखलाने का खेल भी इन दिनों खूब चला है। राजनीति में गरीब और गरीबी को इतना महत्व मिलने के बावजूद गरीबों की दशा में कोई सुधार नहीं हुआ है, यह जनगणना के आंकड़ों को देखे बिना भी समझा जा सकता है। सत्ताधारी दल जब भी अपने विकास का ब्यौरा देते हैं तो यही दर्शाते हैं कि जनता के बड़े हिस्से को विकास का लाभ मिला है। गरीबी घटाकर दिखाने के इस तमाशे को अब रोकना चाहिए। हम तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था हैं, यह दावा तभी सही साबित होगा जब विकास की इस तेजी में भारत के हर नागरिक को शामिल किया जाए। चंद उद्योगपतियों की तरक्की भूखे–नंगे भारत के लिए फेयरनेस क्रीम नहीं हो सकती।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

दिल की धड़कन के सामान्य ढंग से काम न करने का कारण हृदय की बीमारी भी हो सकती है।

डॉ० अविनाश सक्सेना

दिल की धड़कन का सीधा संबंध हमारे जीवन से होता है जब तक यह धड़कता है हम जिंदा रहते हैं और जब यह धड़कना बंद कर देता है तो हमारी मृत्यु हो जाती है। दिल का सामान्य गति से धड़कना भी हमारे लिए आवश्यक होता है। क्योंकि जब दिल की धड़कन सामान्य से ज्यादा या कम हो जाती है। तब भी हमारा जीवन खतरे में पड़ जाता है। दिल की धड़कन का सामान्य गति से अधिक या कम होना एक गंभीर समस्या होती है। हमारा दिल एक मशीन की तरह बिना रुके लगातार काम करता रहता है अर्थात धड़कता रहता है। सामान्य तौर पर दिल के धड़कने का हमें अहसास ही नहीं होता है और यह शांति से अपना काम करता रहता है। परन्तु कभी कभी किन्हीं विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति अपने दिल की धड़कनों को भी महसूस करने लगता है जिसमें व्यक्ति को दिल का धड़कना सामान्य से कुछ अलग मालूम देता है। जैसे एक दो धड़कनें तेज होने के पश्चात् एक धड़कन छूटती सी महसूस होती है जिसकी वजह से व्यक्ति को एक अजीब सी अनुभूति होती है और वह हृदय रोग की आशंका से भयभीत हो जाता है।

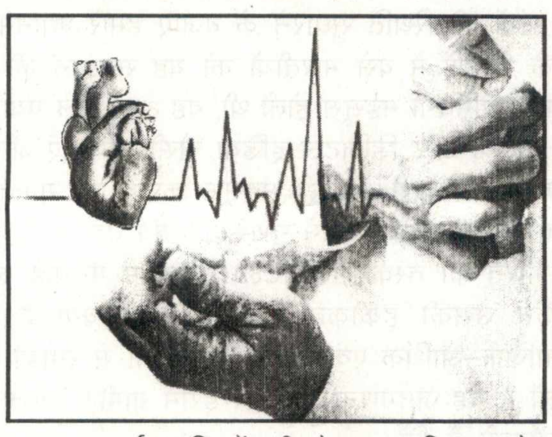

कई व्यक्तियों की तेज धड़कनों के कारण नींद उड़ जाती है और वे इस आशंका से ग्रस्त हो जाते हैं कि कहीं दिल की बीमारी के शिकार तो नहीं हो गए। दिल की धड़कन के सामान्य ढंग से काम न करने का कारण हृदय की बीमारी भी हो सकती है। इसके अलावा कई अन्य कारण भी हो सकते हैं। वैसे तो व्यायाम करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है, परन्तु ज्यादा व्यायाम करने से दिल की धड़कन के सामान्य रूप से काम करने में बाधा पहुंच सकती है। अपनी क्षमता से अधिक परिश्रम करने पर भी ऐसा हो सकता है कि दिल सामान्य गति से न धड़क पाए। ज्यादा चिंता और यौन उत्तेजना की वजह से भी दिल सामान्य ढंग से नहीं धड़क पाता है। तंबाकू पान मसाला, गुटका आदि का सेवन, ज्यादा तनाव, चिंता, गुस्सा, नींद न आना भी दिल की धड़कनों को सामान्य एंग से धड़कने में बाधा पहुंचा सकते हैं। बेरी,बेरी, अनीमिया रोग, हृदय की मांसपेशियों में उत्तेजना, रक्त में ग्लूकोज स्तर का कम होना, नाइट्राइट डिजिटाक्सिन दवाओं का सेवन आदि भी दिल की धड़कनों को सामान्य ढंग से काम न करने देने के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। दिल की धड़कनों का आमतौर पर व्यक्ति को अहसास भी नहीं होता है। अगर दिल की धड़कनों का जरा सा भी अहसास व्यक्ति को हो जाता है तो वह बेचैन हो सकता है, इससे प्रभावित व्यक्ति भयग्रस्त हो जाते हैं। अतः अगर इस तरह का अहसास होता है तो सचेत हो जाएं। कई गंभीर तरह के रोगों के कारण भी यह भी हो सकता है।

अगर आप चाय, काफी, सिगरेट, शराब, गुटका, पान मसाला, तंबाकू आदि का सेवन करते हैं तो इनको छोड़ दें। अगर दिल के धड़कने की समस्या किसी प्रकार की चिंता परेशानी, ज्यादा भागदौड़, ज्यादा जल्दबाजी या फिर किसी तरह के तनाव की वजह से होती है तो बेहतर यही होगा कि जीवन को जहां तक हो सके और जितना भी हो सके, शांत ढंग से जीने से कोशिश की जाए। अपनी मानसिक स्थिति को सुदृढ़ रखें। इसके लिए घर व ऑफिस की जिम्मेदारियों को कम करें। ज्यादा महत्वाकांक्षी न बनें। तनाव से मुक्त होने के लिए योग, ध्यान व प्रणायाम करें। इससे शारीरिक सुदृढ़ता भी हासिल होती है। मानसिक शांति को बनाए रखने के लिए मनोरंजन की ओर ध्यान देना चाहिए और चाहे समय की कितनी भी कमी क्यों न हो इसके लिए समय अवश्य निकालें। निश्चित समय पर नियमित रूप से संतुलित भोजन का सेवन करें। व्यायाम करना अपनी रोजाना की दिनचर्या में शामिल करें। इससे हृदय रोगों से भी बचाव होता है। अगर इन सभी उपायों के पश्चात भी दिल की धड़कन की समस्या बरकरार रहती है तो चिकित्सक की सलाह लें। वह इसकी सही वजह का पता लगाकर उचित व दवाओं के इस्तेमाल की सलाह देगा।

एनर्जी का बेहतर स्रोत तथा शरीर के लिए बेहतर तत्व है अखरोट

नट्स हमेशा सेहत के लिस फायदेमंद रहे हैं। बात अगर अखरोट की करें, तो यह एनर्जी का बेहतर स्रोत होने के साथ इसमें शरीर के लिए बेहतर पोषक तत्व मिनरल्स, एंटीआक्सीडेंट और विटामिन प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। हर मौसम में अखरोट मिल जाते हैं। मगर यह अगस्त में बिल्कुल तैयार हो जाता है। अखरोट का तेल खाना बनाने के अलावा दवाइयों और खुशबू के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

अखरोट में मोनोसेचुरेटेड फैट जैसे ओलिस एसिड प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसमें ओमेगा–३ फैटी एसिड जैसे सिनेलिक एसिड, अल्फा फिनोलिक एसिड और एराकिडोनिक एसिड भी काफी मात्रा में मिलते हैं। अखरोट का नियमित सेवन खून में बैड कोलेस्ट्रोल को कम कर गुड कोलेस्ट्रोल को बढ़ाता है। हर दिन २५ ग्राम अखरोट के सेवन से ६० फीसद ओमेगा –३ फैटी एसिड भी मिलता है। इससे रक्तचाप, कोरोनरी आर्टरी डिजीज और स्ट्रोक के रिस्क कम होते हैं। इसका सेवन ब्रेस्ट कैंसर से बचाव करता है। अखरोट को ब्रेन फूड भी कहा जाता है। अखरोट में कई तरह के यौगिक मौजूद होते हैं जैसेमेलाटोनिन, विटामिन ई. कैरोटिनायड जो हमारे स्वास्थ्य को सही रखने में मदद करते हैं। यह यौगिक कैंसर, बुढ़ापा, सूजन और मस्तिष्क से संबंधित बीमारियों से बचाता है। विटामिन–ई शरीर के लिए बेहद जरूरी होता है और अखरोट में प्रचुर मात्रा में विटामिन ई मौजूद होता है। विटामिन ई शरीर को हानिकारक आक्सीजन से सुरक्षा देता है। सौ ग्राम अखरोट में लगभग २१ ग्राम विटामिन–ई की मात्रा पाई माती है। विटामिन के अलावा इसमें और भी जरूरी विटामिन मौजूद होते हैं जैसे विटामिन बी कांप्लेक्स समूह के शइबोफ्लैविन, नियासिन, थाइमिन, पेंटोथेनिक एसिड और विटामिन बी ६ और फोलेट्स। इसके अलावा अखरोट मिनरल्स का भी बेहतरीन स्रोत माना जाता है। जैसे मैग्नीज, कॉपर, पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन, मैग्नेशियम, जिंक और सेलेनियम। प्रतिदिन एक मुट्ठी अखरोट आपके शरीर को मिनरल्स, विटामिन और प्रोटीन प्रदान करता है। येसभी शरीर के लिए बेहतर जरूरी है। अखरोट के तेल में बेहतरीन खुशबू होती है। यह तेल त्वचा में सूखेपन को भी दूर करता है।

जानलेवा बीमारी है दिमागी बुखार

डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों के अलावा एक अन्य गंभीर संक्रामक रोग है मस्तिष्क ज्वर, जिसे जैपनीज एन्सैफ्लाइटिस भी कहते हैं। आज से करीब तीस–पैंतीस वर्ष पहले तक इस रोग का विस्तार ताइवान, चीन, जापान, कोरिया, पूर्वी साइबेरिया तथा वियतनाम आदि देशों में ही था। भारत में सबसे पहले तमिलनाडु में इस रोग से संबंधित मामले सामने आए। धीरे–धीरे यह रोग देश के अन्य भागों में भी फैल गया। मस्तिष्क ज्वर एक जानलेवा रोग है जिसका कारण ग्रुप बी अरबो वायरस होता है। यह रोग मच्छरों के काटने से फैलता है। इस रोग को उत्पन्न करने वाला विषाणु मुख्यतः जानवरों में पाया जाता है। मच्छर जबइन जानवरों का खून चूसने के लिए इन्हें काटते हैं तो वे वायरस खून के जरिये मच्छरों के पेट में पहुंच जाते हैं और वहां फलते–फूलते हैं। ये मच्छर जब मनुष्य को काटते हैं तो ये वायरस मनुष्य के शरीर में पहुंच जाते हैं और रोग उत्पन्न करते हैं।

रोग का यह वायरस मुख्यतः सुअर में पलता है परंतु वे इस रोग से प्रभावित नहीं होते। इनके शरीर में जो वायरस पनपता है उसका संक्रमण मच्छरों के द्वारा होता है। गाय, भैंस, घोड़ा आदि जानवर भी इन विषाणुओं से संक्रमित हो सकते हैं। कई बार घोड़ों में मस्तिष्क ज्वर के कुछ लक्षण भी देखे जा सकते हैं। कुछ पक्षी भी जैपनीज एन्सैफ्लाइटिस से संक्रमित पाए गए हैं। अभी तक उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह रोग एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में सीधे या प्रत्यक्ष रूप से नहीं पहुंच सकता। यों तो यह रोग साल के किसी भी समय में हो सकता है लेकिन गर्मी के मौसम में इस रोग का प्रकोप बहुत बढ़ जाता है। सामान्य रूप से मस्तिष्क ज्वर के रोगियों की मृत्युदर ३० से ३५ प्रतिशत तक होती है। परंतु कई बार यही दर बढ़कर ६० से प्रतिशत तक पहुंच जाती है। इस रोग से बचाव के लिए रोग रक्षक टीके भी लगाए जाते हैं ये टीके सात से चौदह दिन के अंतर पर लगाए जाते हैं तथा एक वर्ष के भीतर ही अन्य बूस्टर टीका भी लगाया जाता है। तीन साल के बाद इन टीकों को दुबारा लगाया जाता है। जिन लोगों को इस बीमारी के होने की बहुत अधिक संभावना हो उन्हें ये टीके जरूर लगवाने चाहिए। जैपनीज एन्सैफ्लाइटिस हालांकि एक संक्रामक रोग है परंतु यदि हम इसके बचाव पर पूरा ध्यान दें तो इस पर पूरी तरह काबू पाया जा सकता है।

अच्छे काम करने से आयु लम्बी होती है

डॉ० अशोक आर्य

प्रत्येक प्राणी की अभिलाषा होती है कि वह लम्बी आयु प्राप्त करे। आयु लम्बी ही नहीं सुखमय भी हो। दुःखों से भरी छोटी सी आयु का जीवन को जीने का आनन्द प्राप्त करने नहीं देती। दुःखों से भरा प्राणी प्रसन्न ही रहता है। इसलिए ही वह सुखों से भरपूर दीर्घ आयु की कामना करता है। दीर्घ आयु के अभिलाषी को कर्म भी ऐसे ही करने होते हैं, जिससे वह प्रसन्न चित रह सके, दृश्य भी ऐसे देखने होते हैं, जो उस की प्रसन्नता को बढ़ा सके। सम्वाद भी ऐसे सुनने होते हैं, जो उस की खुशियों कोबढ़ा सकें। बोलना भी ऐसा होता है, जो अच्छा हो ताकि प्रतिफल में उसके कानों में सम्वाद भी अच्छे ही पड़ें। इस निमित ऋग्वेद के मन्त्र १.८६.८ तथा यजुर्वेद के मन्त्र २५.२१; सामवेद के मन्त्र १८२४; तैतिरीय; आर. १.१.१ में बड़ा सुन्दर उपदेश किया गया हैः– (यजत्राः) हे पूजनीय (देवाः) देवो! (कर्नेभीः) हमारे कानों में (भद्र) मंगल (सुनुयाम) सुनें (अक्षभिः) आँखों से (भद्र) अच्छा (पश्येम) देखें (स्थिरे)पुष्ट (अन्गई) अंगों से (तुश्तुवान्सा) स्तुति कर्ता (तनुभीः) अपने शरीरों से (देवहितं) देवों के हितकर (यात आयुः) जो आयु है उसे (व्यशेमही) पावें।

भावार्थः– यह मन्त्र दो बातों पर विशेष बल देता है। यह दो बातें ही मानव जीवन का आधार हैं। यह दो अंग ही मानव का कल्याण कर सकते हैं तथा यह दो अंग ही मानव को विनाश के मार्ग पर ले जा सकते हैं। यदि हम इन दोनों को अच्छे मार्ग पर ले जावेंगे, सुमार्ग पर ले जावेंगे, अच्छे कार्यों के लिए प्रयोग करेंगे तो हम जीवन का उद्देश्य पाने में सफल होंगे। अन्यथा हम जीवन भर भटकते ही रहेंगे, कुछ भी प्राप्त न कर सकेंगे। यह दो विषय क्या हैं, जिन पर मन्त्र में प्रकाश डाला गया है, यह हैंः–

- हम अपने कानों से सदा अच्छा ही सुनें।
- हम अपनी आँखों से सदैव अच्छा ही देखें।

विश्व का प्रत्येक सुख इन दो विषयों से ही मिलता है। हमारी शारीरिक पुष्टि भी इन दो कर्मो से ही होती है। हम यह भी जानते हैं कि इस सृष्टि का प्रत्येक प्राणी सुख की खोज में भटक रहा है किन्तु यह जानता नहीं कि सुख उसे कैसे मिलेगा? हम यह भी जानते हैं कि इस सृष्टि का प्रत्येक प्राणी सदा प्रसन्न रहना चाहता है किन्तु वह यह नहीं जानता कि प्रसन्न रहने का उपाय क्या है? जीवन पर्यन्त वह इधर से उधर तथा उधर से इधर भटकता रहता है किन्तु न तो उसे सुख के ही दर्शन हो पाते हैं तथा न ही प्रसन्नता के। हों भी कैसे? जहाँ पर सुख से रहने का, प्रसन्नता से रहने का साधन बताया गया है, वहाँ तो जाकर खोजने का उसने उपाय ही नही किया। वेदों के अन्दर यह सब उपाय बताये गए हैं किन्तु इस जीव ने वेद का स्वाध्याय तो दूर उसके दर्शन भी नहीं किये। किसी वेदोपदेशक के पास बैठकर शिक्षा भी न पा सका। फिर उसे यह सब कैसे प्राप्त हो? वेद कहता है कि हे मानव! यदि तू सुखों की कामना करता है, यदि तू जीवन में प्रसन्नचित रहना चाहता है, यदि तू हृष्ट पुष्ट रहना चाहता है, यदि तू दीर्घ आयु का अभिलाषी है तो वेद की शरण में आ। वेद तुझे तेरी इच्छाएँ पूर्ण करने का उपाय बताएंगे। प्रस्तुत मन्त्र में भी मानव को सुखमय, सम्पन्न व प्रसन्नचित रहने के उपाय बताये हैं। यदि मानव आजीवन सुखी रहना चाहता है, यदि मानव आजीवन प्रसन्न रहना चाहता है, यदि मानव आजीवन निरोग व स्वस्थ रहना चाहता है तो उसे स्वयं कुछ सिद्धान्तों के साथ जुड़ना ही होगा, कुछ नियमों के बन्धन में बँधना ही होगा। बिना नियम में बंधे कोई भी कार्य सफल नहीं होता, कर्त्तव्य परायण व्यक्ति, दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति के लिए यह नियम अत्यन्त ही सरल होते हैं किन्तु कर्म से जी चुराने वाले के लिए, पुरुषार्थ से भागने वाले आलसी के लिए यही नियम ही कठोर बन जाते हैं, जिन्हें करने से वह जी को चुराता है। किसी को चाहे यह नियम कठोर लगें या किसी को सरल किन्तु सुख की कामना के लिए, प्रसन्नता पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए, निरोग शरीर को पाने के लिए तथा लम्बी आयु के लिए इन नियमों का पालन आवश्यक है। इसके बिना कोई अन्य मार्ग उसके पास नहीं है। बस इसके लिए अपने पास अच्छे व सुलझे हुए विचारों का स्वामी होकर मन को अपने वश मे रखना होगा, इन्द्रियों को वश में करना होगा तथा अपने में सात्विक भाग जगा कर कर्मशील होना आवश्यक है। यदि हम स्वयं को हर प्रकार चला पाने में सफल होते हैं तो मन्त्र मे वर्णित नियम हमें सरल ही लगेंगे। यदि हमारा मन ही हमारे वश में नही है, यदि हमारे विचार ही विश्रृन्खल हैं, यदि हमारा अपनी इन्द्रियों पर ही अधिकार नहीं है तथा हम में कोई सात्विक भाव ही नहीं है तो सुखों की आराधना के लिए जो नियम बनाए गए हैं, वह अत्यन्त कठोर लगेंगे। जो इन नियमों को अपने जीवन में अंगीकार कर लेगा, वह सुखी व प्रसन्न होगा, धन ऐश्वर्यो का स्वामी होगा तथा लम्बी आयु पाने का अधिकारी होगा अन्यथा भटकता ही रहेगा।

कठोर अनुशासन के बन्धन में बँधे बिना कभी कोई उपलब्धि नहीं मिला करती। सफलता सदा उसी को मिलती है जो कठोरता से नियमों के पालन का व्रत लेता है। अतः स्पष्ट है कि जीवन में कठोर अनुशासन लाये बिना, नियमों का कठोरता से पालन किये बिना न तो सुख मिल सकता है न ही समृद्धि। यदि सुख, समृद्धि ही नहीं पा सके तो प्रसन्नता कहाँ से होगी। फिर प्रसन्नता के बिना लम्बी आयु भी सम्भव नहीं। अतः लम्बी आयु की कामना करने वालों को कठोर नियमों के बन्धन में बँधना ही होगा। मन्त्र कहता है किः–

- हम अपने कानों से सदा अच्छी बातें ही सुनें। अच्छी चर्चा से मन प्रसन्न होता है। प्रत्येक मानव जो भी कार्य करना चाहता है, वह अपनी प्रसन्नता के लिए ही करता है। अतः अपनी प्रसन्नता के लिए अच्छी चर्चाओं को ही सुनना चाहिए। अच्छी चर्चा को सुनकर मन को प्रसन्नता मिलेगी। प्रसन्न मन सदा राग–द्वेष से दूर रहता है। अतः राग–द्वेष के रोग से भी छुटकारा मिलेगा। ह्रदय के शान्त बनने से जीवन में पवित्रता आवेगी। जिस का जीवन पवित्र है उसको सदा अच्छे मित्र अथवा सहयोगी मिलते हैं, जिससे उसकी ख्याति सर्व दिशा में फैल जाती है।
- *मन्त्र कहता है कि हम* यदि सुखी सम्पन्न व प्रसन्न और स्वस्थ रहकर लम्बी आयु पाना चाहते हैं तो आँखों से सदा अच्छे दृश्य ही देखें। अच्छे दृश्य देखने की अभिलाषा रखने वाले की आँख कभी कुवासना, दूषित मनोवृत्ति के दृश्य देखना पसन्द ही नहीं करेगी। जब हम कुवासना से रहित होंगे। गन्दे व दूषित वातावरण से दूर रहेंगे तो हमें मित्र, सहयोगी व प्रिय लोगों के ही दर्शन होंगे। ऐसे सहयोगी मिलेंगे, ऐसे मित्र मिलेंगे जो इन दुःखों क्लेशों से दूर रहते हुए शुद्ध मन के निर्माण के लिए शुद्ध भावना रखते होंगे। जब हमारा अनुगमन व मार्ग दर्शन ऐसे स्वच्छ साथियों के हाथ में होगा तो हमारे में घृणा व कटुता की कोई भावना आ ही नहीं सकेगी। मनोमालिन्य के अवसर कभी आवेंगे ही नहीं। उत्तम मित्रों में बैठकर प्रत्येक चर्चाएँ होने से कानों में सदैव मधुर स्वर ही पडेंगे ऐसे मित्रों के साथ यात्रा भी करेंगे तो आँखें भी सदा सुन्दर दृश्य ही देख पायेंगी क्योंकि सद्मित्र कभी बुरा नहीं देखते।

स्पष्ट है कि इन दोनों नियमों के पालन से हमारे संयम को पुष्टि मिलेगी। स्वस्थ शरीर व प्रसन्न मन ही दीर्घ आयु का आधार होते हैं। इस प्रकार इन दो नियमों के पालन का परिणाम ही दीर्घ आयु की प्राप्ति है। जब मात्र दो नियमों के पालन से हमें सुख, समृद्धि, पुष्टि, संयम, स्वास्थ्य, निरोगता, प्रसन्नता व दीर्घायु के साथ ही साथ अच्छे मित्र व सहयोगी भी मिलेंगे, यश व कीर्ति भी मिलेगी तो इन्हें अपनाने से कौन इन्कार करेगा? जब एक साथ इतना कुछ मिलेगा तो इस नियम पालन से हम परहेज कैसे कर सकते हैं? निश्चय ही पालन करेंगे।

वेदवाणी

ॐ सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय, सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयः, तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत्।।
(अथर्व-८/४/१२ ऋग्. ७/१०४/१२)

आध्यात्मिकार्थ :- शुद्धान्तःकरण विद्वान सज्जन यह यर्थाथ रूप से जानने के लिये समर्थ होता है कि कौन सत्य है एवं कौन असत्य है। जो बाधित परिच्छिन्न दृश्य आदि एवं अन्त वाली नाम रूपात्मक वस्तु है वह असत्य है। तथा जो अबाधित अपरिच्छिन्न विश्वसाक्षी अनादि अनन्त परमात्मवस्तु है, वह सत्य ही है। मिथ्या विवाद करने वाले बहुभाषी के सत्य एवं असत्य के प्रतिपादक वचन यद्यपि शास्त्रों के यथार्थ वचनों से स्पर्धा करते हैं। उनका जगत असत्य क्यों है? सत्य क्यों नहीं? ब्रह्म सत्य क्यों है? असत्य–शून्य क्यों नहीं? इत्यादि मिथ्या विवाद प्रसिद्ध है। परन्तु इन दोनों प्रकार के वचनों में जो प्रामाणिक हैं, परीक्षित हैं, जो सद्गुरु महापुरुषों के द्वारा निर्णीत हैं, 'ब्रह्म ही सत्य है' 'जगत ही मिथ्याहै' अन्य नहीं, इस प्रकार के शास्त्रों के यथार्थ वचन हैं, उनकी सौम्य स्वभाव वाला मुमुक्षु रक्षा करता है। उनको ह्रदय में धारण करता है। जो वचन अप्रामाणिक हैं, अपरीक्षित हैं, ब्रह्म मिथ्या ही है, जगत सत्य ही है– इत्यादि अयथार्थ वचनों का वह खंडन करता है।

अथवा–इस मंत्रमें 'सत्' शब्द, साधुभाव एवं साधु कर्म तथा 'असत्' शब्द, असाधुभाव एवं असाधु कर्म के बोधक हैं। विद्वान–सज्जन, यह निश्चित रूप से जानता है कि साधुभाव एवं साधुकर्म यश, पुण्य, ह्रदय की एवं परमेश्वर की प्रसन्नता को उत्पन्न करता हुआ निर्मल सुख प्रदान करता है। तथा असाधु भाव एवं असाधुकर्म, अकीर्ति, पाप, ह्रदय की मलिनता एवं ईश्वर का कोप उत्पन्न करता हुआ प्रभूत दुःख ही प्रदान करता है। दोनों के बोधक वचन, परस्पर विरुद्ध साधन, स्वरूप एवं फल के ज्ञापक होने के कारण स्पर्धा करते हुए की तरह प्रतीत होते हैं। इनमें साधुभाव एवं साधु कर्म स्तुत्य एवं स्पृहणीय है, उनके कर्ता सज्जन की सोमदेव संकटों से रक्षा करता है। निन्दनीय एवं वर्जनीय असाधुभाव एवं असाधु कर्म के कर्ता दुर्जन का विनाश करता है।

एक अपारम्परिक पश्चिमी दृष्टिकोण

अल्पसंख्यकों की विरोधाभासी परिभाषा ने भारतीय राज्य व्यवस्था में घुन लगा दिए हैं!

हरिकृष्ण निगम

क्या हम इस आज की राजनीतिक पहेली को एक अनोखा विरोधाभाष कहें जिसे एक लेखक ने देश के शासन तंत्र को अल्पसंख्यकों का, अल्पसंख्यकों के लिए वस्तुतः अल्पसंख्यकों द्वारा बहुसंख्यकों को दौड़ाते वाहन पर पिछली सीट पर बैठकर, राजमार्ग पर दक्षता से चलाया जा रहा है, कहा है।

उपर्युक्त टिप्पणी देश के विभाजन की पृष्ठभूमि से लेकर अयोध्या विवाद की यात्रा के परिप्रेक्ष्य में मुस्लिम मानसिकता के विश्लेषण से सम्बन्धित है। किस तरह बार–बार समाचार पत्रों व श्रव्य–दृश्य मीडिया के माध्यम से यही दोहराया जा रहा है कि देश के सीधे–सादे निर्बोधा मुसलमानों को आतंकवादी बनने के लिए मजबूर किया जा रहा है। इस्लामी पहचान के संघर्ष में तो पेट्रो–डॉलर इस्लाम का दुष्प्रचार तो इस सीमा तक पहुँच गया है कि यह खुलकर कहा जा रहा है कि देश का हर व्यक्ति मूल रूप से सिर्फ एक ही आस्था में पैदा होता है–वह है इस्लाम। बाद में लोगों की अन्य धार्मिक पहचान बनती है। ये स्वार्थी नेता मीडिया के कर्णधार वे लोग ही हैं जो हिन्दू मंदिरों को सरकारी नियंत्रण में रखकर, हिन्दुओं की चढ़ाई सम्पत्ति को सरकारी खजाना बनाकर उस धन को मदरसों, मस्जिदों व गिरिजाघरों पर सरकारी दान स्वरूप देने को लालायित रहते हैं। यह सबको दीखता है पर लगता है कि इस कड़वे सच को मुँह पर लाने की मनाही है।

बाबरी मस्जिद के पक्ष में अयोध्या के मुस्लिम तो पीछे रह गए देश भर में हाहाकार मचाने वालों ने लगातार यह दावा किया था कि जहाँ पर विवादित ढाँचा खड़ा था वह अचल सम्पत्ति के स्वामित्व का विवाद था और न्यायालय ही यह निर्णय ले सकते हैं। क्या किसी ने इस विरोधाभास पर ध्यान दिया है कि इतिहास के अनुशासन व इसके आकलन में अंवेक्षक की दृष्टि एक होती है और राजनीति–प्रेरित तुष्टीकरण की सर्वथा अलग और इसलिए क्या राम मन्दिर वहाँ सदियों पहले से था इस पर संशय करना सिर्फ अनिर्णय की स्थिति अनन्त काल तक बनाए रखने की रणनीति के अलावाा क्या हो सकती है? यदि हम मुड़कर देखें तो पाएँगे कि सन २००३ में भारत सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय से आग्रह किया कि अयोध्या विवाद को शीघ्रताशीघ्र निपटाया जाए तो सम्पत्ति का विवाद उठानेवालों ने सरकार के इस अनुरोध का विरोध किया था। जब स्वयं पुरातत्व विभाग व अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के पुरातत्वविदों ने राडार इमेजिंग, कार्बन डेटिंग व सेटेलाइटों द्वारा भूगर्भ के स्तरों के चित्रण व अन्य साक्षों के आधर पर इसे नाजायज मस्जिद के साथ–साथ इसकी नींव के हिन्दू आधर को सत्यापित किया सेवुफलरवादी, कांग्रेस व साम्यवादी राष्ट्रद्रोहियों ने विवाद

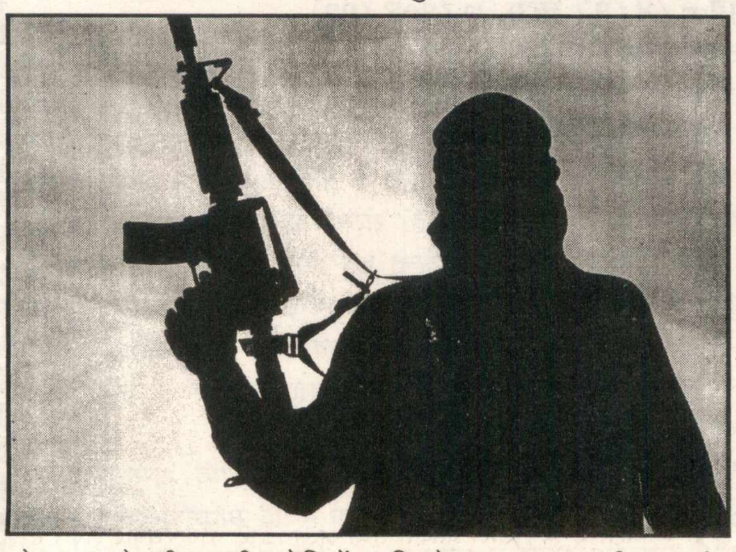

को उलझाने की दूसरी कोशिशें कर डालीं। न्याय पाने के इस देशव्यापी इस्लामपरस्त चीत्कार करने वालों का विरोधभास सामने आया जब वे स्वयं इस प्रकरण को लम्बे समय तक खींचने में जुट गए थे।

अल्पसंख्यकों का अर्थ होता है कि वे देश के अन्य बहुसंख्यकों की अपेक्षा संख्या में एक छोटा समूह हो तथा उसे अपने अस्तित्व कल्याण के सुरक्षा की गारंटी और संवैधनिक आश्वासन मिले। यूरोप में रहने वाले यहूदियों का रहना एक अल्पसंख्यक समूह का पुराना उदाहरण रहा है। पिछले कई दशकों में मुस्लिमों को भी फ्रांस, इंग्लैंड, बेल्जियम, जर्मनी में समुचित स्वीकृति मिली थी और इस कारण से मुस्लिम जनसंख्या में वहाँ वृद्धि हुई थी। पर क्योंकि वे अल्पसंख्यक अघुलनशील नागरिक बने रहें आज उनके विरुद्ध घृणा के हिंसक परिणाम सामने हैं। अब तो नई लहर में उन्हें नागरिक अधिकारों से वंचित करने की माँग भी की जा रही है। अमेरिका में भी अश्वेत प्रवासियों की कई सौ साल तक चली लहर और दास प्रथा के उन्मूलन के कारण श्वेत कावेफशियन मूल के लोगों से अलग पहचान बनाने के लिए उनकी संख्या में वृद्धि होना था। श्वेत वर्चस्व की प्रतिक्रियास्वरूप उनमें से अनेकों ने इस्लाम धर्म अपनाया। जैसा पश्चिम में हुआ। अपेक्षाकृत अल्पसंख्यक सीमित रहे और उनके संसाधनों पर भी अंकुश लगा था। आज भी विदेशी विश्लेषक अपना यही मानदंड भारत के अल्पसंख्यकों पर लागू करते हैं। देश का दुर्भाग्य यह है उन्हीं के सूचकांकों और विश्लेषणों का अंधनुसरण हमारे देश में भी किया जाता है।

हमने यह क्यों भुला दिया है कि हमारे यहाँ के पारसी व यहूदी कभी भी महसूस नहीं करते हैं कि वे अल्पसंख्यक हैं। इसी तरह बहुधा ईसाई धर्मावलम्बी भी जो अच्छी–खासी संख्या में हैं कभी नहीं सोचते हैं कि वे पृथक राष्ट्रीयता वाले हैं। वे अपने विश्वासों के भारतीयकरण में अधिकांशतः कृतसंकल्प हैं। भारत में कभी कोई ईसाई राजनीतिक दल नहीं रहा और न ही हिन्दू–ईसाई दंगे हुए। देश में लगता है सिर्फ मुस्लिम ही अल्पसंख्यक हैं, जिनकी न तो संख्या कम है और न ही वे कमजोर हैं। वे शताब्दियों तक हिन्दुस्तान के शासक रहे थे और उनके अधिकांश समय विश्व भर के मुस्लिम दारूल–इस्लाम या इस्लामी देश मानते थे। वह तो जब १८५८ में दिल्ली से बहादुरशाह जफर को रंगून निर्वासित किया गया था तब से दारूल–हर्ब अथवा विवादों या संघर्ष का गैर–मुस्लिम देश कहा जाने लगा। यद्यपि सारे मध्यकाल में भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिमों की जनसंख्या कभी भी १० प्रतिशत से अधिक नहीं थी फिर भी वे अपने को प्रथम श्रेणी के नागरिक और हिन्दुओं को 'जिम्मी' मानते थे जिनके संरक्षण के लिए उन्हें जजिया कर देना आवश्यक था। कई शताब्दियों तक अनेक क्षेत्रों में संरक्षण के लिए जजिया या अन्य कर देने होते थे जिससे उनका बलात धर्मान्तरण भी न हो। इस सत्य के विपरीत यूरोप के हर देश में मुसलमानों को कब्रगाहों को बनाने तक के लिए भूमि पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा था। इसी तरह इदुलजुहा में जानवरों को काटने वेफ लिए भी यूरोपीय देशों में स्वीकृति लेनी पड़ती थी। जर्मनी में तो जानवरों को हलाल करने के लिए मस्जिदों के भीतर ही इसको करने की अनुमति थी। बेल्जियम में केवल भेड़ और मेमनों की हत्या करने व उनकी खाल या हड्डी के अवशिष्ट को हरे प्लास्टिक थैलों में स्थानीय निकयों की सहायता से दूर फिकवाने के कानून थे। हिजाब या बुर्कों में लड़कियों को स्वूफल आना प्रतिबंधित था, सरकारी कर्मचारी दाढ़ी नहीं बढ़ा सकते थे, मस्जिदों पर लाउडस्पीकर नहीं लग सकते थे और किसी नई मस्जिद को पर्यटक स्थलों व सार्वजनिक भवनों के निकट बनाने की अनुमति नहीं थी। इस परिप्रेक्ष्य में क्या कल्पना भी की जा सकती है कि फ्रांस का कोई प्रान्त या जर्मनी का लॉन्डर या अमेरिका का कोई प्रदेश अपनी इस्लामी रुझानों के कारण देश से अलग होने की माँग करे? भारत में मुस्लिम माँगों के आगे १९४७ में झुककर देश का एक चौथाई हिस्सा खुद काटकर अलग कर दिया–आज भी यह विश्व के अनेक इतिहासकारों को विस्मयजनक लगता है। इस विभाजित राज्य के अलग होते ही यह सारे विश्व में आतंकवाद का जनक व सूत्राधार बन जाएगा–इसके भस्मासुर रूप को आज अमेरिका भी मानता है और इंग्लैंड भी।

आज माना जा रहा है कि शायद जिन्ना की मुस्लिम लीग भविष्य की पर्तों के उस पार यह देख चुकी थी कि कहीं मुस्लिमों को जिस तरह ग्रीस व बल्गेरिया से तुर्कों को प्रथम विश्वयुद्ध के तुरन्त बाद खदेड़ दिया गया था कहीं वहीं अंग्रेजों के विदा होने के बाद भारत में भी न हो। जिन्ना को शायद यह भी याद था कि जब स्पेन में केथोलिक राजवंश द्वारा ईसाई शासन पुनर्जीवित हुआ था तब किस तरह 'मूर' और 'मोजारब' मुस्लिमों को भयानक यंत्रणा दी गई थी। ऐसे आदेश एडिक्ट्स १५वीं शताब्दी में स्पेन में सामान्य बात थी कि मुसलमान अपना बपतिस्मा करायें या निर्वासन स्वीकार करें नहीं तो उनकी हत्या की जाएगी।

वह समय भारत में अब कोई याद नहीं करना चाहता है। आज तो "वक्फ" इस देश में अभी सबसे विशाल शहरी भू–सम्पत्ति के रूप में जगजाहिर है। इतिहास के मध्य युग में हथियाई जा व जमीनों का फल आज भी आंक जा सकता है। इसी तरह संविधान की धारा ४४ के अंतर्गत एक सामान्य सिविल कोड का निर्देश दिया गया पर उसे जानबूझकर अनदेखा किया गया है। स्वयं डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर ने ध्यान दिलाया था कि विवाह, तलाक ओर उत्तराधिकार के इस्लामी कानून के अलावा जिसमें दण्ड संहिता भी शामिल है अल्पसंख्यकों को कोई विकल्प न मिलेगा। शरिया कानून की दण्ड संहिता को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया गया था। पर जब शाह बानो को शेष पृष्ठ 10 पर

पाश्चात्य जीवन पद्धति के दुष्परिणाम

कपूरचन्द जैन पाटनी

आज का युग विज्ञान और तकनीकी विकास का युग है। सूचना –तकनीकी में तो एक प्रकार से विस्फोट हो गया है और विश्व के राष्ट्र एक–दूसरे के समीप आ गये हैं। वैज्ञानिक संसाधनों ने सामान्य व्यक्ति के जीवन को भी बहुत सारी सुख–सुविधाएं उपलब्ध करा दी हैं, लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या मनुष्य का जीवन आज पहले से अधिक सुखी तथा सौहार्दपूर्ण है? उत्तर नकारात्मक ही है। आज व्यक्ति का जीवन पहले से अधिक चिन्ता, संत्रास एवं तनाव से ग्रस्त है। इसका कारण क्या है? आज सारा विश्व पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाने का प्रयत्न कर रहा है। भौतिकता –प्रधान पाश्चात्य युग की चकाचौंध ने सबको सम्मोहित कर लिया है लेकिन इस चकाचौंध का भीतरी पक्ष कितना अभिशाप ग्रस्त है। इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं है।

टूटते परिवार

हाल ही में ब्रिटेन से प्रकाशित सुप्रतिष्ठित पत्र 'दि इकोनामिस्ट– ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जिसने पाश्चात्य जगत के विचारकों को भी चौंका दिया है। शीर्षक है इक्कीसवीं शताब्दी में अमरीकी परिवार का भविष्य। यह रिपोर्ट शिकागो विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय मत अनुसन्धान केन्द्र ने २४ नवम्बर १९९८ को प्रस्तुत की थी। रिपोर्ट में प्रकाशित कुछ तथ्य इस प्रकार हैं–

अमेरिका में परिवारों के संचालन एवं बच्चों के लालन–पालन में विवाह–संस्था का महत्व घट गया है।

सन् १९६० एवं सन १९९८ के बीच ३६ वर्षों में तलाक का प्रतिशत दुगुना हो गया है।

सन् १९९० में अविवाहित माताओं की संख्या ५ प्रतिशत थी जो सन् १९९८ में बढ़कर ३२ प्रतिशत हो गयी है।

सन् १९७२ में ७२ प्रतिशत बच्चे अपने माता–पिता (विवाहित) के साथ रहते थे। सन् १९९९८ में मात्र ५२ प्रतिशत बच्चे अपने माता–पिता (दोनों) के साथ रहते हैं।

अमेरिका में विवाहित स्त्री–पुरुषों को भी बच्चे नहीं चाहिये। सन् १९७२ में ४५ प्रतिशत माता–पिता के बच्चे नहीं थे। सन् १९९६ में ६२ प्रतिशत परिवारों में बच्चे नहीं थे।

अब अमरीकी युवक–युवतियां बड़ी उम्र में विवाह करने लगे हैं तथा कई तो शादी से पहले कुछ साल तक शादीशुदा जीवन का प्रयोग करते हैं।

अमेरिका में २५ प्रतिशत स्त्रियां अपने पतियों से अधिक आमदनी प्राप्त कर लेती है। लगभग ६ प्रतिशत पुरुष घरेलू कामकाज करते हैं तथा उनकी पत्नियां कमाई करती है।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने एक आयोग का गठन किया जिसका उद्देश्य था नागरिक नियमों का नवीनीकरण (कमीशन फॉर सिविल रिन्यूअल)। इसने जो रिपोर्ट दी है उसमें लिखा है कि कई करोड़ अमरीकी नवयुवक टेलीविजन के प्रयोग के कारण भ्रष्ट हो गये हैं। अमेरिका में अधूरी पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चों (ड्रॉप आउट्स) की संख्या बढ़ती जा रही है। वहां के विश्वविद्यालयों में सर्वोच्च स्थान पाने वाले विद्यार्थी अमेरिका से बाहर के (गैर अमरीकी) होते हैं। अमेरिका के लोग जो स्वयं को विश्व के सबसे अधिक समृद्ध एवं शक्तिशाली प्रजातन्त्र के नागरिक मानते हैं सालाना नींद की सात खरब गोलियां निगल जाते हैं अर्थात् प्रति रात १ अरब ८० करोड़ गोलियां खा जाते हैं। इससे पता चलता है कि वहां के लोग भीषण तनाव, क्लेश और कलह की जिन्दगी जी रहे हैं।

समाज वैज्ञानिक की रिपोर्ट- अन्य पश्चिमी देशों में भी सामाजिक जीवन भ्रष्ट होता जा रहा है। भारत का एक समाज वैज्ञानिक यूरोप के एक सम्मेलन में भाग लेने गया। उसने वहां के वैज्ञानिकों से पूछा आपके यहां की सबसे ज्वलन्त सामाजिक समस्या क्या है? उत्तर मिला हमारे यहां १२–१३ वर्ष की बच्ची मां बन जाती है और शादी से पहले १–२ गर्भपात करा लेती हैं। हमें यह मालूम ही नहीं कि जिससे हम शादी करने जा रहे हैं वह पवित्र है या नहीं। हमारे बच्चों का बचपन समाप्त हो गया है। बचपन में ही वे जवान हो गये हैं। यह बहुत गंभीर बात है और यह टेलीविजन के कारण हुआ है।

विद्यालयों में हिंसा– अमेरिका के विद्यालय परिसरों में हिंसा की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। अप्रैल १९९८ में लिटलटन, कोलोराडो में तब यह चरम सीमा पर पहुंची, जब कोलम्बिने हाईस्कूल के दो विद्यार्थियों ने अपनी ही कक्षा में १३ सहपाठियों को गोलियों से उड़ाकर स्वयं अपने जीवन को भी समाप्त कर दिया। नेशनल एसोसिएशन ऑफ एटोर्नी जनरल ने बताया कि पिछले सात वर्षों में कम से कम १४ विद्यालयों में गोली चलाकर अपने सहपाठियों को मार डालने की घटनाएं घटित हो चुकी हैं। १४ मार्च २००० को हजारों अमरीकी नागरिकों ने वांशिगटन में एक जुलूस निकाला तथा प्रस्ताव पारित किया कि अमेरीकी कांग्रेस बन्दूक नियन्त्रण कानून को सख्त बनाये ताकि हिंसक घटनाओं की संख्या कम हो। वर्तमान में अमेरिका में प्रति वर्ष ३०,००० व्यक्ति गोलियों के शिकार होते हैं।

पूर्वीराष्ट्रों में चिन्ता- श्री ली कुआन यू सिंगापुर राष्ट्र के पूर्व प्रधानमंत्री रहे हैं। सिंगापुर के पुनःनिर्माण में उनका बहुत बड़ा हाथ है। एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि अमरीकी समाज में हिंसा की बढ़ती हुई घटनाएं नशीली गोलियों का प्रचलन उन्मुक्त यौन संबंध एवं उच्छृंखलता चिन्ता के विषय हैं। हम नहीं चाहते कि हमारे नवयुवक इन दुर्गुणों से प्रभावित हों।

भारतीय जीवन पर दुष्प्रभाव- भारत भी पाश्चात्य राष्ट्रों का अन्धानुकरण कर रहा है, जिसमें सबसे बड़ी भूमिका टेलीविजन की है। टी. वी. के कई चैनल हमारे पारिवारिक जीवन–मूल्यों को विश्रृंखलित करने का कार्य कर रहे हैं। अधिकांश टी वी चैनल हिंसा, बलात्कार, परस्त्री–गमन, विकृत यौन संबंधन इत्यादि दिखा रहे हैं। रीडर्स डाइजेस्ट जैसा पाश्चात्य पत्र शराब और सिगरेट के विज्ञापन अपने पत्र में प्रकाशित नहीं करता, पर हमारे यहां के टी वी चैनल धड़ल्ले से सिगरेट एवं शराब के विज्ञापन आकर्षक ढंग से प्रदर्शित करते हैं। टी. वी. चैनलों का

शेष पृष्ठ 11 पर

नगर आर्य समाज की स्थापना का ५० वाँ वर्ष (२४ जुलाई २०१५)

इस आर्य समाज की स्थापना का श्रेय टीका राम सरोज–शिवनन्दनदास आर्य आढ़ती, कृपा शंकर, राधे श्याम जिन्दल, नारायण दत्त शर्मा, रघुनाथ प्रसाद मित्तल, राजा राम, इन्द्र देव गुलाटी, वासुदेव शर्मा, कैलाश चन्द्र आर्य को है। इसकी स्थापना २४–०७–१९६६ को टीका राम सरोज के निवास स्थान प्रेम नगर में हुई थी हवन–सत्संग में उस दिन उपस्थित जनों की संख्या ४५ थी। श्रीमती सुमन कुमारी सरोज ने बाजे के साथ २–३ भजन गाए थे। प्रथम चुनाव में टीका राम सरोज प्रधान–शिवनन्दनदास मंत्री तथा इन्द्रदेव गुलाटी कोषाध्यक्ष चुने गए थे। साप्ताहिक यज्ञ–सत्संग वहां दो महीने ही चला क्योंकि प्रधान व मंत्री में मतभेद हो गए थे। शिवनन्दन दास के प्रयास से साप्ताहिक कार्यक्रम मंडी फतहगंज की धर्मशाला में आरम्भ किया। उसमें मोहनलाल शर्मा, तेज सिंह, रिसाल सिह, देवेन्द्र कुमार शर्मा, वेद प्रकाश, सुमन, रमेश सिंह राघव, जे० पी० शर्मा, राधे श्याम गुप्ता, श्याम लाल शर्मा, धनन्जय, यशपाल सिंह, किशोरी लाल आदि नए सदस्य बने। उदयवीर सिंह प्रायः सत्संग में अपने विचार रखते थे। समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ से सम्बन्धित हो गई।

१९६६ से कई बार तक मोती बाग के मैदान में वेद प्रचार सप्ताह जोर–शोर से मनाया जाता था। कर्णवास से बाबू लाल दीक्षित तथा अलीगढ़ से डा० रघुवीर शरण दास समय समय पर आते रहते थे। कार्यक्रम का उद्घाटन जिलाधीश से कराया जाता था। कार्यक्रम प्रातः एंव रात्रि को होता था, श्रोताओं की संख्या अच्छी हो जाती थी। अशिक्षित ब्रहमचारी कृष्णदत्त पूर्व जन्म की स्मृति के आधार पर अद्भुत प्रवचन लेटकर देते थे वे बरनावा से यहां कार्यक्रम में कई बार आए थे। भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् अलीगढ़ की शाखा १९६८ में खोली गई। आर्य समाज की धार्मिक परीक्षाएँ वर्ष में दो बार होती थीं। मैने सिद्धान्त प्रवेश–सिद्धान्त विशारद और सिद्धान्त भूषण की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। राधे श्याम जिन्दल ने कड़ी मेहनत कई वर्षों तक की जिसके कारण अनेकों नए लोग समाज के सदस्य बने। कुछ वर्षों बाद धर्मशाला में कार्यक्रम बन्द करना पड़ा। फिर शिवनन्ददास की दुकान के आगे कार्यक्रम चलता रहा। संयोग से शिवनन्दनदास की वार्ता प्रसिद्ध दान वीर ललता प्रसाद कंसल से हुई। इस वार्तालाप में निश्चय हुआ कि भविष्य में हवन–सत्संग ललता प्रसाद की कोठी पर हुआ करेगा और उन्होंने आश्वासन दिया था कि वे उचित समय पर आर्य समाज का अपना भवन भी बनवा देंगे। ललता प्रसाद जी का स्वर्गवास जल्दी हो गया। फिर आनन्द कुमार कन्सल (बड़े पुत्र) प्रधान बने। बाद में भाईयों में बंटवारा हो गया। अब उनके तीसरे पुत्र सन्तोष कुमार कन्सल प्रधान हैं। ७–६–२०१५ से लक्ष्मीनगर में होने लगा है। डा० गिरीश चन्द्र गुप्त मंत्री है। उपस्थिति १५ के लगभग रहती है। इसमें ख़्याली राम, ओ३म् प्रकाश, प्रेम कुमार कन्सल, सुनील कुमार कन्सल, जगजीत प्रकाश सूद, सतीश चन्द गोयल, डा० बुद्ध प्रकाश, मदन मोहन भसीन आर्य, महेश कुमार शर्मा भी आते थे। विवाह–एक नेपाली युवती का विवाह कराया गया। आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली–१९४७ से १९७१ तक लाल किले की प्राचीर से आंखों देखा हाल में १५ अगस्त को इस समाज का नाम नहीं बोला जाता था जबकि अन्य धर्मस्थलों के नाम बोले जाते थे। उप मंत्री की हैसियत से मैने वीर अर्जुन अखबार में पत्र लिखा जिसका प्रभाव यह हुआ कि १९७२ से आर्य समाज दीवान हाल भी बोला जाने लगा। दूरदर्शन का प्रचलन बढ़ने पर इस आर्य समाज को भी दिखाया जाता है। सार्वदेशिक साप्ताहिक –प्रधान पद के कार्यकाल, में मेरे लिखने पर यह अखबार जनता पुस्तकालय और हिन्दी साहित्य परिषद् में प्रचारार्थ निःशुल्क कई साल तक आया।

इन्द्र देव गुलाटी

एकता-अखण्डता का तिरस्कार है जनमत संग्रह की मांग

विनोद बब्बर

श्रेष्ठता ग्रन्थी एक रोग है। यह जिसे अपनी चपेट में लेता है उसके विनाश का कारण तो बनता ही है, उसके अपने संगठन, समाज, राष्ट्र और कालान्तर में पूरे विश्व के लिए भी समस्या उत्पन्न करता है। इतिहास साक्षी है स्वयं को श्रेष्ठ नस्ल घोषित करने वाले जिनके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था, उनके भाग्य का सूर्य कब का अस्त हो चुका है और आज वे एक छोटा सा देश हैं। इस श्रृंखला में जो एक नाम और जुड़ा है वह है श्री श्री अरविंद केजरीवाल। उन्हें भ्रम है कि सही मार्ग पर चलने वाले वह दुनिया के इकलौते व्यक्ति हैं। इसलिए टकराव उनका शौक है। बेशक यह बीते समय की बाते हैं लेकिन सच तो है कि नौकरी से आंदोलन, पार्टी, सत्ता, अपने, पराये सब उनके निशाने पर रहे हैं। स्वयं को नैतिकता का नायक साबित करते हुए उन्होंने पार्टी के बैठक में बाउंसर बुलाकर अपने मजबूत साथियों को बाहर का रास्ता दिखाया तो विधि द्वारा स्थापित मुख्यमंत्री के पद की जिम्मेवारियों का पालन करने की शपथ लेकर गणतंत्र दिवस समारोह को बाधित करने की धमकी दी। विधानसभा में लोकपाल विधेयक पेश करते हुए नियम मर्यादा का पालन करने से इंकार किया। दुबारा हुए चुनाव में ईमानदारी का ढोल पीटते हुए अपने साथियों की सलाह की अनदेखी करते हुए अनेक अपात्रों को भी टिकट दिये। पिछले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने अपने वोट बैंक को पूरी तरह गवां दिया जिसका परिणाम हुआ केजरीवाल पार्टी की एकतरफा जीत। इस जीत के बाद उन्होंने अभूतपूर्व ढंग से कार्य करते हुए २१ संसदीय सचिव बनाये तथा उपराज्यपाल से टकराव का रास्ता चुना ताकि अपनी श्रेष्ठता ग्रन्थी को तुष्ट कर सके। उनके इस प्रयास को हाई कोर्ट तथा सुप्रीम कोर्ट दोनो ने ही अस्वीकार किया। दिल्ली केन्द्र शासित प्रदेश है इसलिए संविधान उन्हें निरंकुशता की अनुमति नहीं देता इसलिए उन्होंने दिल्ली को पूर्ण राज्य के दर्जा की मांग उठाई। लोकतंत्र में मत भिन्नता होना कोई असामान्य घटना नहीं है। संविधान की मर्यादा का ध्यान रखते हुए सभी को अपनी मांग पर जोर देने का अधिकार है। लेकिन देश की एकता और अखंडता को ताक पर रखने व संविधान की मान्य परम्पराओं का मजाक उघने का अधिकार किसी को नहीं है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने 'जनमत संग्रह' शब्द ही संविधान में शामिल नहीं किया क्योंकि संसद, विधानसभा से स्थानीय शासन के समय–समय पर होने वाले चुनावों में जनता को अपना मत व्यक्त करने का लगातार अवसर मिलता ही रहता है। आश्चर्य है कि केजरीवाल साहब देश के संविधान के विरूद्ध जाकर भी पूर्ण राज्य के दर्जा दिलाने की मांग पर जनमत संग्रह करवाने की तैयारी में है। वह भूल गए हैं कि हर राज्य में पांच वर्ष बाद होने वाले चुनाव जनमत संग्रह ही तो हैं। समय–समय पर होने वाले इन चुनावों के परिणाम उस राज्य विशेष की जनता के राय का प्रदर्शन ही तो है। वह स्वयं जिस चुनाव में भारी बहुमत से जीते वह क्या था? क्या उन्हें इतना विवेक भी नहीं है कि उनकी यह सोच देश के सामने अन्तहीन चुनौतियों का एक ऐसी पिटारा खोल देगी जिससे पार पाना आसान न होगा। आज केजरीवाल दिल्ली में पूर्ण राज्य के लिए जनमत संग्रह करवाते हैं तो कल दिल्ली के लिए अलग संविधान अथवा अलग सर्वभौमिकता के लिए भी करवा सकते हैं। उनका अनुशरण करते हुए देश की एकता को तोड़ने का प्रयास कर रहे देशद्रोही इस या उस राज्य को देश से अलग होने की मांग लिए जनमत संग्रह कराने पर जोर देंगे तो उन्हें किस तर्क से रोका जा सकेगा। हालांकि इस देश का हर नागरिक पूरी तरह से देशभक्त है और समय–समय पर देशद्रोहियों को करारा जवाब देता रहा है। परंतु यह भी नहीं भूला जा सकता कि हम एक बार धर्म के आधार पर हुए रक्तरंजिम विभाजन का दंश झेल चुके हैं। यदि सांप के बिल में हाथ डाला गया तो बहुत संभव है क्षणिक आवेश अथवा साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण फिर से कोई ऐसे जख्म दे जिसका प्रायश्चित भी संभव न हो। अतः इस मूर्खता पूर्ण प्रयास को पूरी सख्ती के साथ नकारने में स्वयं केजरीवाल के साथियों को भी आगे आकर इस प्रस्ताव से अपनी असंबद्धता घोषित करनी चाहिए। क्योंकि यह मुद्दा राजनीति का नहीं राष्ट्र की प्रतिष्ठा का है। अतः उन्हें अपनी राजनैतिक दुकानदारी के लिए राष्ट्र की अस्मिता से खेलने की अनुमति नहीं दी जा सकती। उनके साथियों के लिए यह उचित अवसर है कि वे अपनी अभिव्यक्ति और अस्तित्व का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए केजरीवाल जी को श्रेष्ठता ग्रन्थी का त्यागने का संदेश दें। उन्हें ठंडे दिमाग से मनन करते हुए यह पड़ताल करनी चाहिए कि स्वतंत्रता से आज तक अनेक विषयों पर राज्य और केंद्र सरकारों के बीच मतभेद रहे हैं। लेकिन कभी भी कोई राजनीतिक दल संवैधानिक व्यवस्था को चुनौती देकर अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा पूरी करने की हद तक नहीं गया। क्या वे सभी नेता मूर्ख, अज्ञानी अथवा कायर थे?

केजरीवाल की इस हरकत से उनके राजनैतिक विरोधियों को यह कहने का अवसर मिलेगा कि दिल्लीवासियों की अपेक्षाओं को पूरा करने में नाकाम रहे। केजरीवाल जनमत संग्रह के नाम पर केंद्र से टकराव बढ़ाकर जनता को गुमराह करना चाहते हैं। वह जनसंवाद से बजट बनाने की बात तो जरूर करते हैं पर यह जनसंवाद कब और कहां हुआ इसपर मौन रहते हैं। उन्हें जनमत का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक कठिनाईयों की चर्चा करने और ज्यादा अधिकार अथवा पूर्ण राज्य के दर्जे के लिए आंदोलन करने का अधिकार है। इसके लिए उन्हें कोई नहीं रोक सकता परंतु संवैधानिक प्रावधानों की मर्यादा को तार–तार करने की छूट नहीं हर्गिज नहीं दी जा सकतीहै। यदि कल दूसरे भी ऐसा करने लगे तो भारत को खंड–खंड करने का सपना पालने वाले सफल हो सकते हैं। यह कोई प्रथम अवसर नहीं है जब आम आदमी

शेष पृष्ठ 11 पर

राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन

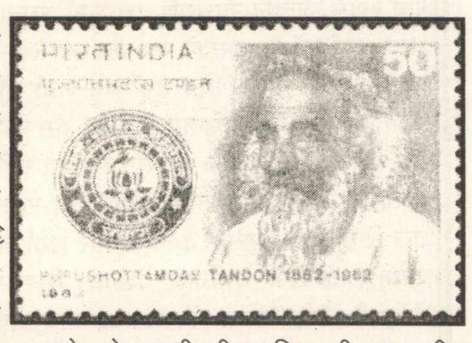

एक अगस्त सन् १८८२ अर्थात् ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध हुए प्रथम स्वातन्त्र्य समर के पच्चीस वर्ष पश्चात इलाहाबाद में जन्मे थे पुरुषोत्तम टण्डन। बाल्यकाल से ही मेधावी–अपनी परम्पराओं के प्रति अनुरक्त पुरूषोत्तम ने अपनी नाम संज्ञा को अपने जीवन वृत्त से सार्थक सिद्ध किया। बाल्यकाल से ही वे वैदिक परम्पराओं के प्रति अनुरक्त रहे। उन्होंने वकालत की परीक्षा में सफलता प्राप्त कर अधिवक्ता के रूप में ख्याति अर्जित की परन्तु राष्ट्रप्रेम की भावनाओं से प्रेरित पुरूषोत्तम दास ने स्वदेश की स्वतन्त्रता हेतु जारी अभियान में मौखिक नहीं अपितु सक्रिय योगदान दिया और आन्दोलन में सक्रिय सहयोग ने उनकी जीवन दिशा ही बदल दी। सन् १९२१ में पुरूषोत्तम दास टण्डन ने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय योगदान कर अपनी पहली जेलयात्रा की थी। उसके बाद तो मातृभूमि की बंधनमुक्ति हेतु संघर्ष पथ के पथिक बने पुरूषोत्तम दास टण्डन ने कई बार कारावास झेला। नमक सत्याग्रह में भी यह नररत्न स्वातन्त्र्य साधक सक्रिय रहा। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी उन्हें बनाया गया बन्दी। भारत माता के महान सपूत श्री टण्डन ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के अग्रदूत की भूमिका का निर्वहन किया। १९३७ में पुरूषोत्तम दास टंडन उत्तम प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष चुने गए थे। जबकि १९४२ के अंग्रेजों भारत छोड़ों आन्दोलन में सक्रिय सहभागिता के चलते वह सातवीं बार काराबद्ध हुए अर्थात् जेल गए। स्वाभिमानी किन्तु अहंकार और दम्भ की भावना से सर्वथा दूर रहे पुरूषोत्तम दास टण्डन ने अपने जीवन मूल्यों को ही अपने व्यक्तित्व का श्रृंगार बनाया। सादा जीवन उच्च विचार की वैदिक विधा को बिना किसी दुविधा के उन्होंने अपनी जीवन शैली बनाया और अपनाया। भारतीय संस्कृति के प्रति मनसा, वाचा कर्मणा अनुरक्त श्री टण्डन के दाढीयुक्त चेहरे पर ज्ञान की आभा तो दमकती ही थी उनके दर्शन कर दर्शक उनमें प्राचीन भारतीय ऋषियों का भी आभास पाते थे। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करते रहे इस महान कर्मयोगी ने देश की राजधानी दिल्ली स्थित आर्यसमाज दीवान हाल के सभागार का भी उद्घाटन किया था। राजनीतिक क्षेत्र में एक निष्ठावान कांग्रेसजन के रूप में वे अनेक लोगों के प्रेरक रहे परन्तु हिन्दुत्व के प्रति अपनी निष्ठा के निर्वहन में भी श्री पुरूषोत्तम दास टंडन ने कभी आंच नहीं आने दी। स्वदेश की स्वतन्त्रता के बाद संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के तौर पर प्रतिष्ठित कराने में भी पुरूषोत्तम टंडन का सराहनीय योगदान रहा। उनके जीवन की वह घटना निश्चय ही उल्लेखनीय है जब १५ अप्रैल, १९४८ को सरयू नदी के तट पर संत देवरहा बाबा से उनका ऐतिहासिक साक्षात्कार हुआ। वहां एक भव्य समारोह में देवरहा बाबा ने उन्हें राजर्षि के सम्मान से विभूषित किया। राजर्षि टंडन को लोक सेवा संघ का अध्यक्ष भी बनाया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद ने उन्हें 'राजर्षि टंडन अभिनन्दन ग्रन्थ' समर्पित किया था। अपनी सैद्धान्तिक निष्ठाओं के समर्पित महान मनीषी भारतीय संस्कृति के प्रति अडिग निष्ठा के धनी राजर्षि ने अपने मान्य सिद्धान्तों पर कभी भी समझौता नहीं किया। बड़े–बड़े नेताओं के विरोध को भी उन्होंने बड़े ही धैर्य सहित झेला। प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता की जीवित जागृत प्रतिमूर्ति रहे श्री पुरूषोत्तम दास टंडन ने एक जुलाई, १९६१ को अपनी नश्वर काया का परित्याग कर अमरत्व की राह ली।

BACK TO VIOLENCE

Jagdamba Mall

In the three consecutive ambushes, National Socialist Council of Nagaland—Khaplang (NSCN-K) has killed 12 jawans of Assam Rifles (AR) last month since the ceasefire was abrogated in April this year. In the recent attack on 'C' Company of 23 Assam Rifles, eight jawans including a jawan of Naga (Territorial Army) Battalion were killed in two separate ambushes by NSCN(K) terrorists on May 3 while nine jawans were injured. The incident occurred at a place which is 10 kilometres away from Tobu town and opposite to Post 148 between Changlang Su and Tobu town in Mon District of Nagaland. The incident took place at a time when the jawans in a truck were escorting a tanker to fetch water from Changlang Su to Tabu town. In the first ambush, three jawans died on the spot. On learning the trap, reinforcement party of the Assam Rifles rushed to the spot where NSCN (K) militants were in wait and launched the second attack. Five jawans were killed in second attack. The NSCN(K) militants also decamped three weapons belonging to the slain AR jawans. The AR jawans killed one NSCN(K) militant in retaliation while another who was injured was dragged away by co-militants.

None of the Naga militant organisations in Nagaland fears of the Central Government in Delhi as their roots pass through churches of Nagaland and reach up to Washington and London where they have their sympathisers.

NSCN(K) has claimed the responsibility of the attacks. Earlier on April 25, NSCN(K) killed one jawan of 19 Assam Rifles in Kohima. On April 2, three Army jawans were killed and three others were wounded when NSCN(K) ambushed an army convoy in Tirap District of Arunachal Pradesh. May 2, four NSCN(K) militants were killed in an encounter with Indian Army at Kamlengching Village under Nungba Police Station in Tamenglong. NSCN(K) has abrogated the 14 years old ceasefire signed with Delhi on the plea that any "meaningful peace and political interaction" with Government of India should be premised on the ground that Nagas were a sovereigncpeople which Delhi does not and should not agree.

No more lackadaisical approach

Due to lackadaisical and insincere approach by Delhi during Congress rule from last many decades, the militant organisations have been on rise in North-East region and hundreds of military and para-military jawans have been gruesomely murdered by these terrorist organisations dancing at the tune of foreign powers. These militant organisations do this openly because they do not fear Delhi. This is the reason that even a small militant organisation like National Democratic Front of Bodoland (Sangbijit–NDFB–S) caused a genocide in Kokrajhar District of Assam on December 23 in recent past wherein more than 100 people were killed, hundreds were injured, over a thousands of houses were burnt and over a lakh of people took shelter in several relief camps. This time, Narendra Modi Government in Delhi was prompt enough and Operation Flush Out was immediately launched. Several of cadres of NDFB(S) were killed, several arrested and Sangbijit (the Chief of NDFB—S) is reported to be hiding in Myanmar. Now, peace has returned in Kokrajhar of Assam. But in Nagaland, the situation is entirely different. None of the Naga militant organisation fear Delhi. The reason is that their roots pass through churches of Nagaland and reach up to Washington and London where they have their sympathisers. If not controlled in the very beginning, it will compel the people of Nagaland leave a sleepless night.

घटने की बजाय बढ़ रहा 'जातिवादी' जहर

मिथिलेश सिंह

पिछले दिनों मुझे एक विचित्र अनुभव से गुजरना पड़ा। एनजीओ चलाने वाले एक मित्र, जिसका ऑफिस सेंट्रल दिल्ली में है, जाया करता हूँ। संयोग से उसके यहाँ काम करने वाली नौकरानी का एक्सीडेंट हो गया और वह दूसरी नौकरानी की तलाश में था। हालाँकि, नौकरानी ढूंढना कितना कठिन काम है, यह हम सबको पता है, लेकिन दोस्त की लाटरी लग गयी, जब बरसात के समय तीन चार औरतें उसके ऑफिस के बाहर इस नौकरी के लिए खड़ी दिखीं। वह बड़ा खुश हुआ और एक–एक करके सबसे काम और पता इत्यादि के बारे में पूछ डाला। मन ही मन उसने एक को ऑफिस के लिए सेलेक्ट भी कर लिया था। कुछ दिनों के बाद उसके ऑफिस मेरा फिर जाना हुआ, तो पता लगा कि वह किसी को भी नहीं रख पाया। उसने जो कारण बताया, वह हफ्तों तक मेरे दिमाग में गूंजता रहा कि वह औरतें सेंट्रल दिल्ली की वाल्मीकि बस्तियों से थीं और

ऑफिस में कुछ लोगों ने भंगी द्वारा चाय–पानी देने पर आपत्ति दर्ज की थी। गाँव में तो इस तरह की खबरें सुनता था, लेकिन सेन्ट्रल दिल्ली जैसी आधुनिक जगह और पढ़े लिखे लोगों द्वारा इस प्रकार का व्यवहार मुझे अंदर तक हिला गया। इसके सामानांतर दूसरी खबर भी सुनने को मिली और यह खबर विश्व के उच्च संस्थानों में शामिल आईआईटी रूड़की से है। जब इन संस्थानों में लड़के प्रवेश लेते हैं तो उनके माँ–बाप के द्वारा एक डॉक्यूमेंट पर हस्ताक्षर ले लिया जाता है कि यदि स्टूडेंट्स की परफार्मेंस ठीक नहीं रही तो उन्हें संस्थान से निकाला भी जा सकता है। अपने इस अधिकार का प्रयोग करते हुए संस्थान ने इस साल ७० छात्रों को निष्कासित कर दिया और साथ ही यह सुगबुगाहट भी शुरू हो गयी कि जिन छात्रों को निकाला गया है, वह निचली जाति के हैं! हद है! आखिर, इस देश का गुनाह क्या है कि ईश्वर ने छः ऋतुओं के साथ, अनेकों नदियां और पहाड़–पठार सब कुछ दिया, लेकिन साथ में जातिवाद रुपी 'रक्तबीज' भी दे दिया। इसे जितना ही समाप्त करने की कोशिश की जाति है, उतना ही बढ़ता जाता है। वैसे यह कोई नयी बात नहीं है और भारतीय राजनीति के लिए तो कतई नहीं कि चुनाव आते ही जातिवादी समीकरण साधने की कोशिशें शुरू हो जाती हैं और इस बार कोशिश हुई है बिहार विधानसभा चुनाव के परिप्रेक्ष्य में। चिंता की बात यह है कि अब तक जातिवादी राजनीति से दूर रहने का दावा करने वाली भाजपा भी इस खेल में शामिल हो गयी है, वह भी सरेआम। एक सम्मलेन में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने यह कहकर विश्लेषकों को सकते में डाल दिया कि देश को कई ओबीसी मुख्यमंत्री, विधायक, सांसद भाजपा ने दिए हैं। शाह ने इस मुद्दे में प्रधानमंत्री को भी लपेटते हुए आगे कहा कि देश को पहला ओबीसी प्रधानमंत्री भी भारतीय जनता पार्टी ने ही दिया है। हालाँकि, उनकी यह बात तथ्यात्मक रूप से गलत है, लेकिन उनका मंतव्य तो जाति पर राजनीति करना था, जो शुरू हो गया। पिछले दिनों दिल्ली के विज्ञान भवन में हुए राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर से सम्बंधित एक समारोह में प्रधानमंत्री मोदी ने भावुक वक्तव्य देते हुए बिहार को जातिवादी राजनीति से दूर रहने की नसीहत दी थी. तब भला किसे पता था कि खुद उनकी ही पार्टी इस राजनीति की खुल्लम खुल्ला शुरुआत करेगी। खैर, यह भाजपा की मजबूरी भी हो सकती है, क्योंकि बिहार के जमीनी हालात पर जो जातीय गणित चल रहा है, उसमें इस प्रकार के बयान देना राजनीतिक विवशता भी हो सकती है, पर सवाल जस का तस है कि

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शैक्षणिक पाठयक्रमों की समीक्षा करके हिन्दू राष्ट्रवादियों की जीवनियां शामिल की जाएँ, जबलपुर की घटना शर्मनाक : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके मध्य प्रदेश की जबलपुर घटना को शर्मनाक बताया है, जिसमें NCERT की एक किताब में, परवेज मुशर्रफ को महापुरुष बताया गया है। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश के जबलपुर में एनसीईआरटी की एक किताब में पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ को महापुरुष बताया गया है। जबलपुर जिला बार असोसिएशन ने इसकी शिकायत कलेक्टर एसएन रूपला से की है। असोसिएशन के सदस्य अमित साहू का कहना है कि तीसरी कक्षा की 'नैतिक शिक्षा, सामान्य ज्ञान एवं योग' किताब में मुशर्रफ को महापुरुष लिखा गया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने स्पष्ट कहा कि अकबर, औरंगजेब इत्यादि को महिमा मंडित करके हम पहले ही हिन्दुओं को पर्याप्त अपमानित कर चुके हैं और अब परवेज मुशर्रफ को महापुरुष घोषित करके बेशर्मी की सीमा–रेखा भी पार कर ली गयी है। राष्ट्रीय महामंत्री एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री ने कहा कि सम्पूर्ण भारत में पाठयक्रमों में हिन्दू राष्ट्रवादियों की जीवनियों और विचारों को प्रमुखता दी जानी चाहिए। साथ ही साथ हिंदुत्व के खिलाफ विचार रखने वाले तथाकथित प्रशासकों, प्रोफेसर एवं संस्थानों के निदेशकों को तुरंत बर्खास्त किया जाना चाहिए। यदि केंद्र और राज्य सरकारें शैक्षणिक संस्थानों से देशद्रोहियों एवं हिंदुत्व के खिलाफ विचारधारा रखने वालों को तत्काल बाहर नहीं करती है, तो हिन्दू महासभा राष्ट्रव्यापी आंदोलन करेगी।

आम अब 'खास' हो गयी है, रिश्तेदारों एवं पार्टी वर्करों की नियुक्ति और महंगाई पर जवाब दें केजरीवाल : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल से उनके चुनावी वादों पर जवाब माँगा है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने डीजल, पेट्रोल दिल्ली में सबसे ज्यादा महंगा होने पर सवाल खड़ा किया और पूछा कि दिल्ली वालों को क्यों लूटा जा रहा है, क्या इसीलिए दिल्लीवासियों ने बहुमत से उन्हें जिताया। राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने केजरीवाल के द्वारा रिश्तेदारों और अपने कार्यकर्ताओं की मोटी सेलरी पर नियुक्ति को लेकर सवाल किया और पूछा कि क्या यही उनका असली स्वराज है? राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने २१ संसदीय सचिवों की नियुक्ति पर अरविन्द केजरीवाल को घेरते हुए कहा कि वह पिछले मुख्यमंत्रियों से अलग कौन सा 'विशेष' कार्य कर रहे हैं, जो उन्हें इस प्रकार के बड़े स्टाफ की जरूरत पड़ रही है। इसके अतिरिक्त हिन्दू महासभा के नेताओं ने अरविन्द केजरीवाल के घर का बिजली बिल लगातार लाख रूपये से अधिक आने की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री जनता को एक के बाद एक धोखा दे रहे हैं। पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित द्वारा बड़ा मकान लेने पर उसकी आलोचना करने वाले आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया खुद उस मकान पर जम गए हैं। हिन्दू महासभा के केंद्रीय पदाधिकारियों ने कहा कि इन मुद्दों का जवाब यदि आम आदमी पार्टी नहीं देती है तो उसके खिलाफ जनांदोलन किया जायेगा।

जींद, हरियाणा से 'हिन्दू जागो अभियान' की शुरुआत करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा के साथ हरियाणा प्रदेश के पदाधिकारी, मीडिया कवरेज की कुछ तस्वीरें...

पंजाब केसरी www.haryanakesari.in हरियाणा CHANDIGARH SUNDAY • 19.7.2015 5

एक देश, एक झंडा, एक भाषा से ही अखंड भारत होगा मजबूत : चंद्रप्रकाश

कहा-अग्निवेश चले जाएं पाकिस्तान

जींद, 18 जुलाई (का.प्र.): अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रप्रकाश ने कहा कि एक देश, एक झंडा और एक भाषा यही हिन्दू महासभा का मकसद है और इसके जरिए ही अखंड भारत को मजबूत बनाया जा सकता है।

हिन्दू महासभा के सम्मेलन में मंच पर मौजूद पदाधिकारी और भाग ले रहे कार्यकर्ता।

देश छोड़कर चलें जाएं अग्निवेश

हरिभूमि न्यूज . जींद

अभाहिम राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रप्रकाश ने कहा कि स्वामी अग्निवेश साधु का चोला तो पहनते हैं लेकिन साधु नहीं हैं। वह मुस्लमानों के बड़े पैरोकार बनते हैं और ऐसे व्यक्ति को भारत में

- अभाहिम ने किया हिंदू जागो अभियान का शुभारंभ

रहने का अधिकार नहीं है। स्वामी अग्निवेश को पाकिस्तान चले जाना चाहिए। चंद्रप्रकाश शनिवार को हिंदू महासभा के हिंदू जागो अभियान का श्रीगणेश अर्बन एस्टेट कालोनी की जाट धर्मशाला में करने के बाद पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि एक देश, एक झंडा और एक भाषा यही हिंदू महासभा का मकसद है और इसके जरिए ही अखंड भारत को मजबूत बनाया जा सकता है। जब हिंदुओं के खिलाफ आजम खान और ओवैशी जैसे लोग जहर उगलते हैं तो उनके खिलाफ कहीं भी कोई मामला दर्ज नहीं होता लेकिन जब जींद में हिंदू महासभा के पदाधिकारियों ने पाकिस्तानी आतंकवादियों का समर्थन करने के लिए स्वामी अग्निवेश के खिलाफ पत्रकार सम्मेलन में कुछ कहा तो हिंदू महासभा के पदाधिकारियों के खिलाफ जींद पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। चंद्रप्रकाश ने कहा कि हिंदू महासभा के पदाधिकारी जींद पुलिस की इस तरह की कार्रवाई से घबराने वाले नहीं हैं। जींद पुलिस किसी भी तरह से हिंदू महासभा की आवाज को नहीं दबा सकती।

जींद। हिंदू महासभा के सम्मेलन में मंच पर मौजूद पदाधिकारी और भाग ले रहे कार्यकर्ता।

हमला करने वालों को करारा जवाब दे सरकार : कौशिक

जाट धर्मशाला में अखिल भारतीय हिंदू महासभा में बोले सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष

भास्कर न्यूज | जींद

शनिवार को भारतीय हिंदू महासभा ने जाट धर्मशाला से जनजागरण अभियान की शुरुआत की। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश ने कहा कि भारत पड़ोसी देश से संबंध तोड़ कर उनके द्वारा सीमा में किए जा रहे हमलों का जवाब दे। ताकि भविष्य में देश में कोई आतंकवादी घटना न हो। संगठन मंत्री दलजीत सिहाग द्वारा शुरू किए गए हिंदू जागो अभियान के दौरान कौशिक ने कहा कि जंग से नुकसान ही हुआ है।

शनिवार को हिंदू महासभा ने हिंदू जागो अभियान का श्री गणेश किया। इस अवसर पर हिंदू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना लाल शर्मा, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष धर्मपाल सिवाच, सीनियर प्रवक्ता ललित भारद्वाज, हिंदू महासभा के प्रदेश युवा अध्यक्ष विनोद शर्मा, संगठन मंत्री दलजीत सिहाग, हिंदू महासभा जींद के संयोजक कर्मा रामकली, पूर्व पुलिस कप्तान व करनाल से हिंदू महासभा के जिला अध्यक्ष सूरज पाल सिंह, गोनी ईगरा, वीरेंद्र खोखरी, विजय कुमार, सुमित कुमार, निरंजन कुमार, शमशेर, मोनू, विक्की, प्रदीप, प्रदेश प्रचार मंत्री भीम सिहं श्योराण, प्रधान अनिल चावला, मोहित ठकराल, गुलशन मक्कड़, डॉ. रामकुमार शर्मा, हरीश भुटानी, डॉ. प्रदीप कुमार, संजय राजपुरिया, कृष्ण बाल्मीकी, संदीप गोस्वामी, गायत्री यादव आदि मौजूद रहे।

जींद. हिंदू जागो अभियान के तहत मंच पर मौजूद हिंदू महासभा के पदाधिकारी।

शेष पृष्ठ 6 का **एक अपारम्परिक पश्चिमी.....**

उसी कानून के तहत गुजारा भत्ते के लिए सुप्रीम कोर्ट ने १९८५ में भारतीय दंड संहिता के तहत निर्णय दिया इस निर्णय को मुस्लिम महिला विधेयक की सहायता से उलट दिया। राजीव गाँधी के समय यह पहला प्रकरण नहीं था जब सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की अवमानना की गई थी। १९६८ में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को एक सरकारी संस्थान घोषित कर दिया था। उसके बाद जल्दी ही कांग्रेस ने इस विश्वविद्यालय को अल्पसंख्यक विश्वविद्यालय घोषित कर दिया। अल्पसंख्यक की परिभाषा विरोधाभासों से भरी है।

दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी ने २२ नवंम्बर २०१४ को अपने पुत्र को अपने जीते जी इमाम की पदवी देने के अवसर पर पाकिस्तानी प्रधनमंत्री नवाज शरीफ को आमंत्रित किया, नरेन्द्र मोदी को नहीं। उसकी और उसके कथित अनुयाइयों की स्वामिभक्ति आतंकवाद के पोषक पाकिस्तान से है—यह मुसलमानों के आज के विरोधाभासों को रेखांकित करता है। क्या भारतीय नागरिकों को इन भावी खतरों के प्रति सचेत रहना आवश्यक नहीं है?

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 8 का

एकता-अखण्डता का तिरस्कार.....

पार्टी के किसी नेता ने जनमत संग्रह की बात की हो। पार्टी के संस्थापक (मगर अब निष्कासित) प्रशांत भूषण भी नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षाबलों की तैनाती पर जनमत संग्रह की मांग कर चुके हैं। प्रशांत भूषण ने यह भी कहा था, 'माओवादियों का आप में स्वागत है।' माओवादियों की कानूनी लडाई लड़ना उनका व्यवसाय हो सकता है लेकिन देश के प्रति भी उनका कुछ कर्तव्य है। उस समय उन्होंने इसे अपना निजी बयान बताकर विवाद को बढ़ने से रोक दिया हो परंतु अब जबकि केजरीवाल भी लगभग वहीं बात कह रहे हैं तो क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि इन लोगों को देश की एकता अखंडता की परवाह नहीं है। वैसे यह शुभ संकेत है कि कांग्रेस ने तत्काल केजरीवाल के इस अविवेकी प्रस्ताव का विरोध कर जिम्मेवार विपक्ष होने का परिचय दिया है। उसे भी इस बात का अहसास है कि एक बार यह परम्परा शुरू हो गई तो भारत को तोड़ने के प्रयासों में लगे पड़ोसी देश की शह पर अलगाववादियों को विश्व के सामने यह रोना रोने का अवसर मिलेगा कि हमसे भेदभाव होता है। यदि दिल्ली में जनमत संग्रह हो सकता है तो हमारे यहां क्यों नहीं? यदि केजरीवाल ओर उनके साथी आत्मनिर्णय या जनमत संग्रह कराने के प्रति सचमुच्र गंभीर हैं तो उन्हें एक्र बार फिर से चुनावी दंगल में उतरना चाहिए लेकिन देश को कमजोर करने वाली कोई भी बात कहने से पहले महाभारत के शांतिपर्व में पितामह भीष्म का वह कथन अवश्य स्मरण रखना चाहिए जिसमें उन्होंने कहा था, 'शांति के लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े वह कम हैं परंतु जब सवाल राष्ट्र की अस्मिता का हो, यदि हजार युद्ध भी लड़ने पड़े तो भी पीछे नहीं हटना चाहिए।'

शेष पृष्ठ 1 का

नासिक में सिंहस्थ कुंभ मेला......

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों से चाक–चौबन्द व्यवस्था करने की मांग की है। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि चूंकि करोड़ों तीर्थ यात्री कुंभ स्नान के लिये पधारेंगे, इसलिये उनके ठहरने, पानी सफाई एवं सुरक्षा की चाक–चौबन्द व्यवस्था की जाये।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक....................................300/- रुपये
आजीवन सदस्य...............................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का

घटने की बजाय बढ़ रहा......

खुद को राष्ट्रवादी कहने वाली भाजपा भी यदि क्षेत्रीय दलों की तरह कीचड़ भरी राजनीति में उत्तर गयी तो, उसके सिद्धांत का क्या होगा? वह सिद्धांत, जिसे लेकर उसका मातृ संगठन देश भर में शाखाएं लगाता है और कश्मीर से कन्याकुमारी तक अलख जगाने के काम में लगा रहता है। सवाल यह भी है कि प्रधानमंत्री के उस नारे का क्या होगा, जो कहता है 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'! खैर, अमित शाह के उकसाने के बाद बिहार के दुसरे राजनेता भला कहाँ चुप बैठने वाले थे? बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बार फिर जातीय जनगणना की रिपोर्ट जारी न करने पर केंद्र सरकार को आड़े हाथों लिया और कहा कि एक ओर बीजेपी के अध्यक्ष अमित शाह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अन्य पिछड़े वर्ग (ओबीसी) में खड़ा करते हैं और दूसरी तरफ जातीय जनगणना के आंकड़े सरकार ने रोक रखा है। कई सालों तक बिहार पर राज करने वाले लालू यादव ने इसके बाद मोर्चा ही खोल दिया और अंग्रेजों तक का सपोर्ट भी कर दिया। उन्होंने कहा कि क्या अंग्रेज बेवकूफ थे, जिन्होंने १६३१ में जातीय जनगणना करवाई? अंग्रेजों की मंशा सही ठहराते हुए लालू यादव ने कहा कि किस जाति के लोगों की सामाजिक और आर्थिक हैसियत क्या है, संपूर्ण विकास के लिए जानना जरूरी है। वैसे ही देश की आजादी के ६४ साल में हुए विकास से किस जाति को कितना फायदा मिला, इसकी सही परख वर्तमान जातीय–सामाजिक–आर्थिक जनगणना से ही संभव है। जाति के सहारे सहारे आरक्षण के मुद्दे को छेड़ते हुए लालू प्रसाद ने कहा कि इस सर्वेक्षण से जातियों के आरक्षण के प्रतिशत पर भी असर पड़ना तय है। सवाल सिर्फ इतना ही हो, ऐसा भी नहीं है। प्रश्न यह है कि यह सभी बातें किसी चुनाव से शुरू होकर चुनाव समाप्त होने तक ही क्यों चलती हैं? क्या वाकई आज २१ वीं सदी में भी इस प्रकार की राजनीति की उम्मीद की जानी चाहिए। भारत देश के पिछड़ेपन का प्रमुख कारण जातिवादी व्यवस्थाओं का रूढ़िवादिता में जकड़ना ही रहा है और इसके साथ साथ अनेकों जातीय संघर्ष इस परिप्रेक्ष्य में पहले ही हो चुके हैं। लेकिन, सत्ता की रोटी सेंकने वालों को भला इसकी परवाह रही ही कब है, जो आज होगी? हाल ही में, राजस्थान में हुए गुर्जर आंदोलन में भी ऐसा दृश्य देखने को मिला, जो इतिहास के मध्यकाल की याद दिलाता है और वह है आरक्षण के लिए 'रेल की पटरियां उखाड़ना'! समाज में ,राजनीति में, घर में और दूसरी तमाम जगहों पर यदि जातिवादी जकड़न इसी प्रकार रही तो, 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का सपना हवा हवाई ही रह जायेगा, इस बात में रंच मात्र भी संदेह नहीं है। निजीकरण के इस दौर में, जब योग्यता को पुरस्कार मिलना तय होता जा रहा है और साथ में 'कॉम्पिटिटिव भावना' भी सम्पूर्ण विश्व में बढ़ती जा रही है, ऐसे में भारत में जातिवादी जहर का बढ़ते जाना न सिर्फ चिंतनीय, बल्कि निंदनीय भी है। यदि समाज के अगुआ, इन विषयों को समझने और सुलझाने में हीलाहवाली दिखाते रहे तो वह दिन दूर नहीं, जब साथ में रहते हुए भी कोई भारतवासी साथ नहीं होगा और वह दिन भारतीय इतिहास का काला दिन ही होगा!

शेष पृष्ठ 1 का

भारत को अखण्ड हिन्दू......

मद्यपान, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण की रक्षा, हिन्दू एकता राष्ट्रवाद के लिये पूरे हरियाणा में पत्रक व पुस्तकें बाँटी जायेगी। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक ने कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र था, है और रहेगा। उन्होंने कार्यकत्ताओं का आह्वान किया कि हमें अखण्ड हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिये कार्य करना है। उन्होंने कहा कि केन्द्र और राज्य की सरकार भी मुस्लिम तुष्टीकरण में लगी है इसलिये हिन्दू हितों का कार्य भी हिन्दू महासभा को करना है। सम्मेलन को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने उपस्थित जनों व हरियाणा वासियों का आह्वान किया कि हमें भारत को पुनः विश्व गुरू बनाना है। हमें भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति की रक्षा करनी है। हमें हिन्दू हितों की रक्षा का कार्य प्राथमिकता से करना है। हमें हिन्दुओं में एकजुटता लानी है तथा जाति के आधार पर सभी प्रकार के मतभेदों को दूर कर राष्ट्र रक्षा करनी है। सम्मेलन को हरियाणा प्रदेश हिन्दू महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष श्री धर्मपाल सिवाच, संगठन मंत्री दलजीत सिहाग, युवा अध्यक्ष श्री विनोद शर्मा, प्रचार मंत्री श्री भीम सिंह श्योरण, प्रवक्ता ललित भारद्वाज आदि ने भी सम्बोधित किया।

शेष पृष्ठ 7 का

पाश्चात्य जीवन पद्धति के....

उद्देश्य पाश्चात्य उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रचार करना है जो हमारे देश की संस्कृति भावनाओं के प्रतिकूल हैं। बचपन से ही हत्याओं एवं बलात्कारों के दृश्य निरन्तर देखने का बच्चों के मानसिक विकास पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। देश में बढ़ती हुई हिंसक घटनाएं इसके दुष्परिणाम हैं। हमारी सामाजिक संस्थाओं को संगठित होकर सरकार से आग्रह करना चाहिये कि वह टी. वी. चैनलों को नियन्त्रित करें, ताकि हमारे परिवारों में विकृत संस्कार उत्पन्न करने वाले दृश्य प्रदर्शित न हों।

दिनांक 05 अगस्त से 11 अगस्त 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
अष्टमी	07 अगस्त	शुक्रवार
कामिका एकादशी	10 अगस्त	सोमवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

क्रान्तिकारी योद्धा चन्द्रशेखर आजाद

जीवन परिचय : काकोरी ट्रेन डकैती और साण्डर्स की हत्या में शामिल निर्भय क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद का जन्म २३ जुलाई, १६०६ को उन्नाव, उत्तर प्रदेश में हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद का वास्तविक नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था। चन्द्रशेखर आजाद का प्रारम्भिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भावरा गांव में व्यतीत हुआ। भील बालकों के साथ रहते –रहते चन्द्रशेखर आजाद की माता जगरानी देवी उन्हें संस्कृत का विद्वान बनाना चाहती थीं। इसलिए उन्हें संस्कृत सीखने के लिए विद्यापीठ, बनारस भेजा गया। दिसम्बर १६२१ में जब गांधी की द्वारा असहयोग आन्दोलन की शुरूआत की गई उस समय मात्र चौदह वर्ष की उम्र में चन्द्रशेखर आजाद ने इस आन्दोलन में भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया गया। जब चन्द्रशेखर से उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने अपना नाम आजाद और पिता का नाम स्वतन्त्रता बतायां यहीं से चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी का नाम चन्द्रशेखर आजाद पड गया था। चन्द्रशेखर को पन्द्रह दिनों के कडे कारावास की सजा दी गई।

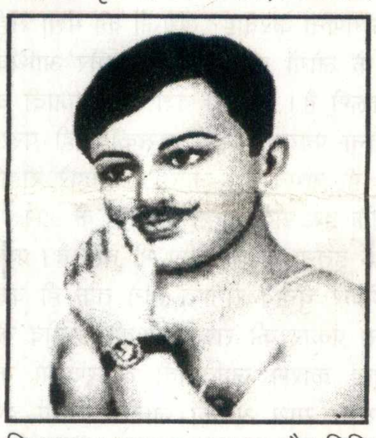

क्रान्तिकारी जीवन : १६२२ में गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर दिया गया। इस घटना ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया। उन्होंने ठान लिया कि किसी भी तरह देश को स्वतन्त्रता दिलवानी है, एक युवा क्रान्तिकारी प्रनवेश चैटर्जी ने उन्हें हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन जैसे क्रान्तिकारी दल के संस्थापक रामप्रसाद बिस्मिल से मिलवाया। आजाद इस दल और बिस्मिल के, समान स्वतन्त्रता और बिना किसी भेद–भाव के सभी को अधिकार जैसे विचारों से बहुत प्रभावित हुए। चन्द्रशेखर आजाद के समर्पण और निष्ठा की पहचान करने के बाद बिस्मिल ने चन्द्रशेखर आजाद को अपनी संस्था का सक्रिय सदस्य बना दिया। अंग्रेजी सरकार के धन की चोरी और डकैती जैसे कार्यों को अंजाम देकर चन्द्रशेखर आजाद अपने साथियों के साथ संस्था के लिए धन एकत्र करते थे। लाला लाजपत राय की हत्या का बदला लेने के लिए चन्द्रशेखर आजाद ने अपने साथियों के साथ मिलकर साण्डर्स की हत्या भी की थी। आजाद का यह मानना था कि संघर्ष की राह में किसी हिंसा का होना कोई बड़ी बात नहीं है। इसके विपरीत हिंसा बेहद जरूरी है। जलियांवाला बाग जैसे अमानवीय घटनाक्रम जिसमें हजारों निहत्थे और बेगुनाहों पर गोलियां बरसाई गई, ने चन्द्रशेखर आजाद को बहुत आहत किया जिसके बाद उन्होंने हिंसा को ही अपना मार्ग बना लिया।

झांसी में क्रान्तिकारी गतिविधियां : चन्द्रशेखर आजाद ने एक निर्धारित समय के लिए झांसी को अपना गढ बना लिया। झांसी से पन्द्रह किलोमीटर दूर ओरछा के जंगलों में वह अपने साथियों के साथ निशानेबाजी किया करते थे। अचूक निशानेबाज होने के कारण आजाद दूसरे क्रान्तिकारियों को प्रशिक्षण देने के साथ पंडित हरिशंकर ब्रह्मचारी के छड नाम से बच्चों के अध्यापन का कार्य भी करते थे। वह धिमारपुर गांव में अपने इसी छड नाम से स्थ लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गए थे। झांसी में रहते हुए चन्द्रशेखर आजाद ने गाड़ी चलानी भी सीख ली थी।

चन्द्रशेखर आजाद और भगतसिंह : १६२५ में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की गई। १६२५ में ही काकोरी कांड हुआ जिसके आरोप में अशफाक उल्लाखां, बिस्मिल समेत अन्य मुख्य क्रान्तिकारियों को मौत की सजा सुनाई गई। जिसके बाद चन्द्रशेखर ने इस संस्था का पुर्नगठन किया। भगवतीचरण वोहरा के सम्पर्क में आने के बाद चन्द्रशेखर आजाद भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु के भी निकट आ गए थे। इसके बाद भगतसिंह के साथ मिलकर चन्द्रशेखर आजाद ने अंग्रेजी हुकूमत को डराने और भारत से खदेड़ने का हर संभव प्रयास किया।

चन्द्रशेखर आजाद का निधन : १६३१ में फरवरी के अन्तिम सप्ताह में जब आजाद गणेशशंकर विद्यार्थी से मिलने सीतापुर जेलगए तो विद्यार्थी ने उन्हें इलाहाबाद जाकर जवाहरलाल नेहरु से मिलने को कहा, चन्द्रशेखर आजाद जब नेहरु से मिलने आनन्द भवन गए तो उन्होंने चन्द्रशेखर की बात सुनने से भी इन्कार कर दिया। गुस्से में वहां से निकलकर चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखेदव राज के साथ एल्फ्रेड पार्क चले गए। वे सुखदेव के साथ आगामी योजनाओं के विषय में बात ही कर रहे थे कि पुलिस ने उन्हें घेर लिया। लेकिन उन्होंने बिना सोचे अपनी जेब से पिस्तौल निकालकर गोलियां दागनी शुरू कर दीं। दोनों ओर से गोलीबारी हुई। जब चन्द्रशेखर के पास एक मात्र ही गोली शेष रहे गई तो उन्हें पुलिस का सामना करना मुश्किल लगा। चन्द्रशेखर आजाद ने पहले ही प्रण किया था कि वह कभी भी जिन्दा पुलिस के हाथ नहीं आएंगे। इसी प्रण को निभाते हुए उन्होंने वह बची हुई गोली खुद को मार ली। पुलिस के अन्दर चन्द्रशेखर आजाद का भय इतना था कि किसी को भी उनके मृत शरीर के पास जाने तक की हिम्मत नहीं थी। उनके मृत शरीर पर गोली चला और पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद ही चन्द्रशेखर की मृत्यु की पुष्टि हुई। बाद में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात जिस पार्क में उनका निधन हुआ था उसका नाम परिवर्तित कर चन्द्रशेखर आजाद पार्क और मध्य प्रदेश में जिस गांव में वह रहे थे उसका धिमारपुर नाम बदलकर आजादपुरा रखा गया।

कबिरा खड़ा बजार में

कब तक गाल आगे करेंगे हम

अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी ने कभी कहा था कि कोई तुम्हें एक थप्पड़ मारे तो तुम्हे दूसरा गाल आगे कर देना चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री इसका पूरा पालन कर रहे हैं। अब अपना गाल तो वह देने से रहे, आखिर वह हमारे देश के शेर हैं। इसलिए हमारे जवानों के सिर पाकिस्तानियों को सौंप रहे हैं। चुनाव के पहले तक वह बताते रहे कि हमारा ५६ इच का सीना है। लोगों ने समझा कि इतनी चौडी छाती लिये हमारे प्रधानमत्री पाकिस्तान का मुंहतोड जवाब देंगे। लेकिन, यह तो औरों से कहीं आगे निकले। पाकिस्तान बार–बार हमारे ऊपर वार कर रहा है। और हमारे पीएम हैं कि वार्ता के लिए परेशान हैं। उन्हे यात्रा और वार्ता बहुत पसद है। सो वह वार्ता के लिए पूरा प्रयास बार–बार कर रहे हैं। यह अलग बात है कि पाकिस्तान ही वार्ता के लिए मना कर दे रहा है। वह यह क्यो नहीं समझ रहे हैं कि वार्ता से कुछ नहीं होना। इससे केवल समय की बर्बादी व देशवासियो का मुख्य समस्यायों से ध्यान बटाने के अतिरिक्त कुछ नहीं है। पकिस्तान में सत्ता का असली प्रतिष्ठान तो वहां की सेना है। वहां सेना, आईएसआई व आतंकी समूह मिलकर देश का एजेंडा तय करता है। ऐसे मे पाकिस्तान के प्रधानमंत्री से वार्ता अनुपयोगी है। एक तरफ पाकिस्तान का रक्षा मंत्री परमाणु बम की धमकी दे रहा है। उधर हमारे प्रधानमंत्री वार्ता की जद्दोजहद मे जुटे हैं, वही इस्लामाबाद के एक शीर्ष राजनयिक ने कहा है कि कश्मीर मुद्दे को शामिल किए बिना भारत–पाकिस्तान के बीच कोई वार्ता नहीं होगी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के विदेश मामलों के शीर्ष सलाहकार सरताज अजीज के हवाले से कहा है कि मुंबई हमला मामले में पाकिस्तान के आरोपियो के खिलाफ सुनवाई के शीघ्र निबटारे के लिए अतिरिक्त जानकारियों की जरूरत है। अजीज ने कहा कि मोदी के साथ बैठक के दौरान शरीफ ने भारत मे हुए समझौता एक्सप्रेस विस्फोट मामले की सुनवाई में प्रगति पर जानकारी मांगी। उनका कहना था कि हमारे देश तथा हमारे क्षेत्र में कश्मीर, आतंकवाद, गरीबी तथा कम मानव विकास जैसी कई चुनौतियां हैं। लोग शांति की राह देख रहे हैं, ताकि उनकी सरकार दक्षिण एशिया में रह रहे करोड़ों लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए सामाजिक–आर्थिक एजेंडे पर ध्यान केंद्रित कर सके। कश्मीर का जिक्र करते हुए कहा कि अपना भाग्य खुद लिखने का कश्मीरियों को अभी तक अधिकार नहीं मिला है। उनके जायज संघर्ष में पाकिस्तान कश्मीरियों के साथ खड़ा है। शरीफ ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में सालाना भाषण के दौरान हमारे सैद्धांतिक रुख की स्पष्ट तौर पर पुष्टि कर दी है। अपने कश्मीरी भाइयों को राजनीतिक, नैतिक तथा कूटनीतिक समर्थन देना हम जारी रखेंगे। एक तरफ पाकिस्तान है कि लगातार सीमा पर सीज फायर का उल्लंघन कर रहा है। हमारे जवानों पर गोलियां बरसा रहा है। यही नहीं अपना सीना चौडा करके कह रहा है कि भारत के साथ वार्ता नहीं करेंगे। दूसरी तरफ हमारे पीएम हैं। चुनाव तक तो पाकिस्तान को जवाब देने की बात करते रहे। लेकिन सत्ता पाते ही उनके सुर बदल गये। अब वह शांति बहाली, वार्ता की बात कर रहे हैं। सैनिकों पर बरस रही गोलियों से उनको कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। पाकिस्तान को उसी की भाषा में समझाने का प्रयास करें। और अगर पाकिस्तान को जवाब नहीं दे सकते तो कम से कम बार–बार वार्ता के लिए हाथ जोड़कर हमारे देश का सिर तो न झुकायें।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 29 जुलाई से 04 अगस्त 2015 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।